आज के चार नाटक

आज के चार नाटक

निर्मोही व्यास

चयन प्रकाशन, बीकानेर-334001

प्रकाशक
चयन प्रकाशन
हनुमान हत्था, बीकानेर-334001

आवरण : अमित भारती

प्रथम संस्करण : 1991

मूल्य : 60 00

मुद्रक : एस० एन० प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

AAJ KE CHAAR NAATAK By Nirmohi Vyns Rs. 60 00

समर्पण

ममता की मूर्ति मां तीजरानी को
सादर समर्पित

अपनी ओर से…

आधुनिक हिन्दी रगमच पर जब से नए और प्रयोगशील नाटको का उद्भव हुआ है, तब से यह सोच गहराने लगा कि क्या ये नाटक नाट्यशिल्प के परम्परागत स्वीकृत नियमो से मुक्त होने का सकेत तो नही दे रहे ? लोकजीवन को दिग्दर्शित करने वाले नाटको के साथ कही कोई अन्याय तो नही हो रहा ? हिन्दी रंगमंच पर, जो आज अनुवाद रगमच बना हुआ है, अनुदित नाटको के मंचन की होड़ लगी हुई है। इसलिए वहा हिन्दी के मौलिक नाटको की उपयोगिता पर नाक सिकोडा जा रहा है।

अब इस स्थिति मे शनैः-शनैः बदलाव आने लगा है। नए नाटको मे जहा सामाजिक चेतना के स्वर उभरते रहे है, वहा हिन्दी के मौलिक नाटको का महत्त्व भी स्वीकारा जाने लगा है।

सामाजिक परिवेश में लिखी मेरी इस पहली हिन्दी नाट्य रचना की सार्थकता तभी है जब यह प्रस्तुति के रूप में जीवन्त होकर रगदर्शको के साथ अपने को जोड़ सके।

आज के चार नाटक में 'टूटते बन्धन' 'परिर्त्तवन', 'नया नाटक' एव 'कोल्ड कॉफी'। ये चारो ही मचीय नाटक है।

'आज के चार नाटक' में परिस्थितियो से जूझते एक ऐसे वृद्ध की कथा है जो अपनी एकमात्र फौजी जीवन की रक्षा के लिए अपने दत्तक पुत्र और पुत्रवधू की उपेक्षाओ को सहजता से झेलता अपने जीवन को आगे घसीटता जा रहा है। एक दिन उसकी सहनशक्ति जब जवाब दे जाती है तो उसके खुरदरे होठों पर विद्रोह के स्वर उभर आते हैं और तब वह परम्पराओ के बंधनों को तोड़कर भावी चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए स्वयं ही नई पगडंडी तलाशता आगे बढ़ जाता है।

'परिवर्तन' एक ऐसी युवती की कहानी है जो अपने पति पर अधिकार जताने में सबसे आगे है। वह एक पुलिस अधिकारी की बेटी है और अधिकार जताना उसके संस्कार में शामिल है। यह भावना उसे अपने पति से अलगाव देती है। लेकिन जब उसे अपने घरेलू नौकर के दाम्पत्य जीवन की मधुरता का निकट से

अहसास होता है तो उसका सोया हुआ नारीत्व यकायक जाग उठता है। उसमें परिवर्तन की नई लहर हिलोरे लेने लग जाती है।

'नया नाटक' दहेज विरोधियों के लिए एक नई प्रेरणा है जो युवकों को समाज की इस गन्दगी से बचाने का संकल्प दिलाती है। दहेज का दानव आज इस तरह मुंह फाड़कर खड़ा है कि पता नहीं कितनी बहू-बेटियों की बलि ले चुका है अब तक। इसका दमन तभी किया जा सकता है जब युवक-युवतियां कमर कसकर आगे आएं।

'कोल्ड कॉफी' में नौकरशाही के दिवालिए दिमागीपन की रोचक झांकी दर्शायी गई है। एक कार्यालय है जहां चपरासी से लेकर अफसर तक सब निकम्मे है। अपनी जेब भरने के सिवाए और वे कोई काम नहीं करते। एक महाशय उनके पास टेंडर खरीदने के लिए आता है और वे सारे उसी को ही अपना नया रीजनल मैनेजर समझ बैठते है। फिर उसकी आवभगत मे जो इन्तजाम किए जाते हैं, उन्ही से उनकी मूर्खता जानी जा सकती है।

अन्तिम तीनो नाटकों मे हास्य-व्यंग्य की प्रचुरता है।

—निर्मोही व्यास

अनुक्रम

टूटते बन्धन	11
परिवर्त्तन	43
नया नाटक	63
कोल्ड कॉफी	87

टूटते बन्धन

पात्र-परिचय

हीरालाल : परिस्थितियो मे जूझता एक वृद्ध
महेश : हीरालाल का दत्तक पुत्र
कमला : महेश की पत्नी
राकेश : महेश का छोटा भाई
रेखा : हीरालाल की सगी पौत्री
सीमा : रेखा की सहेली
राजू : राकेश का सहपाठी
चन्द्रकात : कमला के भाई का एक दोस्त
धोबी : महेश का धोबी

अनुराग कला केन्द्र, बीकानेर की ओर से नाटक 'टूटते बन्धन' की अब तक कई प्रस्तुतिया दी जा चुकी है।

सितम्बर, 1985 मे उत्तर रेलवे की अन्तरमण्डलीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताए नई दिल्ली स्थित हिमाचल-भवन के प्रेक्षागृह में आयोजित की गई थी, जिसमे बीकानेर मंडल द्वारा प्रस्तुत नाटक को सर्वश्रेष्ठ नाट्य प्रस्तुति का पुरस्कार मिला।

आकाशवाणी, बीकानेर द्वारा भी इस नाटक का रेडियो प्रसारण हो चुका है।

[सुबह का समय । हीरालाल मसौते मे कमरे का फर्श साफ कर रहा है। उधर अन्दर से कमला के तीखे बोल सुनाई पड़ रहे है। फिर, एकाएक रेखा को धकेलती हुई कमला मच पर आती है।]

कमला : मै तो तग आ गई तुमसे। किससे भरू तेरा पेट ? मेरे पास कुछ नही है। (आंखें दिखलाती हुई) मरी अब खडी-खड़ी मेरा मुह क्या देख रही है? जाती क्यो नही स्कूल ? वो रहा तेरा बस्ता। उठा और जल्दी से निकल यहा से। आज पेट मे कुछ नही पडेगा तो सास नही निकल जाएगी। मरी कहा से पल्ले पड गई ! मां-बाप तो मर गए और इसे छोड़ दिया मेरी छाती पर मूंग दलने। आग लगे इस मरी को। (झिड़कती हुई) अब जाती है कि नही ?

[रेखा सिसकिया भरती हुई बस्ता समेटती है]

कमला · मर यहा से। (कहती हुई अन्दर लौट जाती है।)

[रेखा हाथ मे बस्ता लिये धीरे-धीरे हीरालाल के पास आकर खड़ी हो जाती है। हीरालाल की आखें गीली हो रही है। वह मसौता छोड़कर भरे मन से रेखा के सिर पर हाथ फेरता है, उसे दुलारता है।]

रेखा : बाबा, स्कूल जा रही हू।

[हीरालाल कापते हाथो मे रेखा का बस्ता टटोलता है। उसमे से टिफिन निकालकर देखता है जिसमें एक बासी रोटी है।]

रेखा : (हीरालाल के हाथ से टिफिन ले लेती है। रोटी उसमें वापस डालती हुई) रात की बची हुई है।

['कोई बात नही' की भावना से हीरालाल रेखा को धीरज बंधाता है।]

रेखा : बाबा, आप थक गए हो तो लाइए, यह बाकी पोचा मैं लगा दू।

हीरालाल : नही-नही···तू जा।

रेखा : अच्छा, चलती हूं।

हीरालाल : जा···।

[रेखा चली जाती है। हीरालाल का ममत्व पिघलकर आंखों के रास्ते बाहर निकल पड़ता है। अपनी विवशता से आहत हो रहा है। फिर, कुर्ते की कोर से आंसू पोंछकर, न चाहते हुए भी, काम में जुट जाता है।]

कमला : (अन्दर से दूध का बर्तन लेकर आती हुई) मरी वह चली गई?

हीरालाल . ···(गर्दन हिलाकर चुप रहता है।)

कमला : (मेज पर बर्तन रखकर) फर्श साफ करके आज तो गैस का पता लगाकर आइए। चार दिन से कह रही हू, कानों पर तो जैसे ताला ही पड़ गया है। कोयलों के लिए तो बोल आए? वो भी आज-आज के है। कल तक गैस या कोयले नही आए तो भूखे पेट रहने की नौबत आ जाएगी।

हीरालाल : ···(केवल गर्दन हिलाकर रह जाता है।)

कमला : यो गर्दन हिलाकर 'हां' भरने से कुछ नही होगा। काम निपटाकर फौरन मालूम करके आइए। तब तक मैं जरा लीला के घर होकर आती हू। *(बड़बड़ करती हुई) कोई काम ठीक से नही होता।* सारा तो दूध जला दिया। (ध्यान आकर्षित करती हुई) जो कपड़े धोए हैं, उनको तो तनी पर सुखा देना। वरना वो ऐसे ही पड़े रहेंगे। (जाती-जाती) और हा, यह बर्तन रखा है, सबसे पहले दूध लाना है।

[कमला बाहर चली जाती है। हीरालाल अपने काम को फुर्ती से निपटाने की चेष्टा करता है। इस बीच बाहर से राकेश का प्रवेश। हीरालाल को पौचा लगाते देखकर वह चौखट पर ही ठिठक जाता है। एकाएक उसे विश्वास ही नही हो रहा कि पौचा लगाने वाला उसका अपना 'बडा बाप' है। कन्धे पर झोला लटकाए और हाथ मे सूटकेस लिये थोड़ी देर के लिए वह एकटक होकर खडा देखता रहता है। अनायास हीरालाल की दृष्टि उस पर पड़ती है कि वह सूटकेस वही पर रखकर हीरालाल के पाव छूता है।]

राकेश : पाव लगू बडे पापा।

[हड़बडाते हुए पहले तो हीरालाल मसौने को अपने पीछे की ओर छिपाने का असफल प्रयास करता है। फिर आशीर्वाद देता है।]

हीरालाल : खुश रहो।

राकेश : (जानते हुए अनजान बनकर) क्या कर रहे है?

हीरालाल : कुछ···नही।

राकेश : (होंठों पर अनचाही हंसी बिखेरते हुए) कुछ तो कर ही रहे हैं। तबियत तो ठीक है !

हीरालाल : ठीक ही है।

राकेश : (पास बैठते हुए) यह तो आपका शरीर ही बता रहा है। क्या हालत बना ली है ?

[हीरालाल चुप]

राकेश : (स्थिति को समझते हुए) ठीक है। भाई साहब कहां है ?

[हीरालाल अन्दर की ओर इशारा करके रह जाता है।]

राकेश : हुं···। अन्दर अपने कमरे में सो रहे होंगे। साढे सात बजने को आए, अभी तक हमारे भाई साहब सो ही रहे है ! मैं जाकर उठाता हूं।

[सूटकेस लेकर अन्दर जाता है। हीरालाल बाल्टी एक कोने मे रखकर वाशबेसन पर हाथ धोकर आता है। फिर, बर्तन उठाकर पैरों में जूती पहनता है और दूध लेने बाहर निकल जाता है।]

राकेश : (महेश के साथ बातें करते हुए अन्दर से आता है) अजीब बात है। सचमुच आप तो घोडे बेचकर सोते है। आपकी बला से कोई आए और कोई जाए।

महेश : (आंखें मलते हुए) अरे, यहां कौन आता है ? फिर, बड़े पापा जो आगे बैठे हैं।

राकेश : यह तो कोई बात नही हुई। बड़े पापा···(हीरालाल को न देखकर) अरे, इतनी देर में वे कहा चले गए ! अभी तो यही थे।

महेश : (सोफे पर बैठते हुए) अरे, होंगे कही इधर-उधर। इतना बड़ा मकान है, बैठ गए होंगे कही। या फिर बाथरूम में घुस गए होंगे। अब देखना पूरा एक घण्टा लगाएंगे वहां।

राकेश : (बात को दूसरी ओर मोड़ते हुए) पप्पू नही दिखाई दे रहा।

महेश : अरे, वो यहां कहा ? उसे इस बार हमने पब्लिक स्कूल मे डाल दिया है। वही होस्टल में रहता है।

राकेश : पर, अभी तो वह छोटा ही है।

महेश : दस का हो चुका। छोटा कहा है।

राकेश : फिर भी···।

महेश : ···ठीक है रे। वैसे भी यहां उसकी सगत कुछ अच्छी नही थी। शैतानी भी बहुत करने लग गया था।

राकेश : रेखा भी तो है। अरे हां···वो कहा है ?

महेश : स्कूल गई होगी।

राकेश : वो ''कौन-से स्कूल में पढ़ती है ?

महेश : है यहां एक मिडिल स्कूल। नजदीक ही है। जाती तो है, पर पढ़ती-बढ़ती कुछ नहीं।

राकेश : क्यों ?

महेश : भेजे में, सिवाय गोबर के, कुछ भी तो नहीं है। जब भी पढ़ने के लिए कहते है, जी चुराती है। उसे तो बस, सारे दिन खेलने दो।

राकेश : खैर, भाभी अन्दर क्या कर रही हैं ?

महेश : वो'''वो शायद इस समय लीला के यहां गई होगी। तभी दिखाई नहीं दे रही। तू बैठ, मैं उसे बुलाकर लाता हूं।

राकेश : अजी, आप कहां जाएंगे ? आ जाएंगी।

महेश : अरे इतनी जल्दी लौटने वाली थोड़े ही है। बातों में लग गई तो उठेंगी ही नहीं। तू अखबार देख, तब तक मैं हो आता हूं। (जाने का उपक्रम करता है।)

राकेश : पर, ऐसी जल्दी भी क्या है ? आ जाएगी थोड़ी देर में।

महेश : अरे नहीं रे। तू उसे नहीं जानता। बगैर कहे वो लौटने वाली देवी नहीं है। मैं अभी बुला लाता हूं। पांच मिनट ही मुश्किल से लगेंगे।

[महेश बाहर निकल जाता है। राकेश अखबार के पन्ने बैठे-बैठे उलटता है कि बाहर से कोई आवाज आती है।]

राजू : (बाहर से) महेश बाबू, कोयलन की बोरी रखत है।

राकेश : कौन ?

राजू : (बाहर से ही) हम है साहेब, राजू।

राकेश : राजू ! अरे, अन्दर तो आ।

राजू : (अन्दर आकर) अरे छोटे बाबू, आप ! आप कब आइ गवा ?

राकेश : आज ही आया हूं, अभी-अभी।

राजू : जयपुर ही रहत हो ?

राकेश : और कहां जाऊं ! अरे खड़ा क्यों है ? बैठ न !

[राजू नीचे फर्श पर बैठ जाता है।]

राजू : आज तो हमरे बड़े भाग, आपके दर्शन होइ गवा।

राकेश : यह तो अच्छी बात है। पर, यह स्वांग क्या बना रखा है तुमने ?

राजू : छोटे बाबू, स्वांग-वांग हमकू नाही आत। हां, ओइ सही है, अब हम कोयलन का गाहा ढोत है। जब से आप लोगन का कारखाना छोड़ा, हमरी ऐइ हालत होइ गवा।

राकेश : कहां से ला रहे हो कोयला ?

राजू : उइ टाल से। बड़े मालिक कल रात हमकू हुकम देइ गवा, सो अबहूं

लेइके आइ रहत।

राकेश : बड़े पापा को अब तू बडे मालिक क्यों कहता है? अरे, पहले वाली बात अब नही है।

राजू : नाही-नाहीं…ऐइसा मत कहो छोटे बाबू। हमरे वास्ते तो आज भी वो बड़े मालिक हैं। उनकू हम कैंइसे भूलत। हमकू वो दिन आज भी याद है…।

राकेश : …जब हम लोगो का कारखाना वस्त्र उद्योग का सबसे बड़ा कारखाना था। पर, बुरे दिन पूछकर नही आते। सब कुछ चला गया।

राजू : अब उन बातन की याद नाहीं दिराउ। खैइर, का बात है? घर मे कोउ नाहीं?

राकेश : नही, महेश भाईसाहब थे अभी। भाभी को जरा बुलाने गए हैं।

राजू : छोटे बाबू, इक बात पूछत है। बड़े मालिक कू आप अपने सग जयपुर क्यों नाहीं ले जात। अगर वो नाही चलत है, ऐइ भूमि छोड़न नाही चाहत, तो कम से कम गोपाल बाबू की उइ गुड़िया कू तो यहां से लेइ जाइ सकत हो।

राकेश : मैं समझा नहीं। ऐसी क्या बात है?

राजू : बात…बात तो आप आपहु ही समझ जात। जब अपनी आखन से देख लेई तो हमकू कहन की नौबत ही नाही रहत।

राकेश : (विचारमग्न होकर) हुं…! भाईसाहब ऐसा क्यों कर रहे हैं?

राजू : ये तो वोइ जानत। छोटे बाबू, इस घर कू हम सदा से अपना ही समझत! ऐइ कारण बड़े मालिक अउर गुड़िया का दु:ख हम नाहीं देख सकत।

राकेश : अच्छा, एक बात बता। बीच में, बडे पापा पब्लिक पार्क के आगे रेडीमेड कपडो का गाड़ा लगाते थे, पता है तुझे?

राजू : हां-हां। पता है हमकू।

राकेश : वो काम अब नही करते?

राजू : वाह छोटे बाबू। आपकू यही नाहीं पता?

राकेश : नही।

राजू : जब से मुए उइ तांगेवाले ने बडे मालिक कू गिराइ दिया, गाड़ा लगाना ही छूट गया।

राकेश : (हैरानी से) तांगे वाले ने गिरा दिया" बड़े पापा को! कब?

राजू : उइ तो। आपकू कुछ भी नाही पता?

राकेश : नही तो।

राजू : ई बात कू तो आठ-दस मईना होय गया। चार मईने तो सफाखाने

में भरती होय रये।

राकेश : क्या कह रहे हो ? हुआ कैसे यह ?

राजू : ऐइसे कि गाडा गुडकायकें लाय रहत कैं पीछे से इक तांगेवाला अन्दर कू आय पडा। लडखड़ाय कैं ऐइसे गिरे कैं हड्डिया सारी की सारी चरमराय गई। यह तो शुकर करो भगवान का कैं कुछ चलन-फिरन लग गए।

राकेश : अच्छा ! इतनी बड़ी घटना हो गई और मुझे इत्तला तक नही की।

राजू : अब आप आपहु समझ लेओ कैं इन लोगन के बीच बड़े मालिक कैंइसा जीवन जीवत है।

राकेश . हु'''। इसका मतलब है, भाईसाहब की मानसिकता अब भाभी के हाथो की कठपुतली बनकर रह गई है।

राजू · अउर का ? (बाहर से किसी के आने की आहट सुनकर) अब हम चलत है। कोई आइ रआ।

राकेश : फिर मिलना।

राजू · (उठता हुआ) जरूर। कोयलन की वोरी वावत वड़े वावू कू वोल देउ। अच्छा राम-राम।

[राजू वाहर चला जाता है। राकेश अखवार देखने लगता है कि सीमा अन्दर आती है।]

राकेश · (सीमा को देखकर) क्या बात है वेवी ? कौन हो ?

सीमा . जी, मेरा नाम सीमा है।

राकेश . किससे मिलना है ?

सीमा . रेखा से। कहां है वो ?

राकेश : वो तो स्कूल गई है।

सीमा . ओह, तो वो स्कूल चली गई।

राकेश . क्यो, आज नही जाना था ?

सीमा : हा, मैं यही कहने आई थी। पिकनिक के लिए आज छुट्टी रखी हुई है।

राकेश : अच्छा तो आज तुम लोगो को पिकनिक पर जाना है।

सीमा : जी। पर, शायद रेखा को इसका पता नही है।

राकेश : क्यो ? उसे क्यों नही पता ?

सीमा : वो कुछ दिन से स्कूल जो नही आ रही। (इधर-उधर झांकती हुई) वावा नही दिखाई दे रहे।

राकेश : वो अन्दर कही हैं।

सीमा : और आंटी ?

राकेश : वो वाहर गई हैं।

सीमा : तब तो ठीक है।

राकेश : क्या ठीक है ?

सीमा : बात यह है अंकिल, यह आंटी है न, रेखा को बहुत दु:ख देती है। जरा भी चैन नहीं लेने देती। सारे दिन उसे काम में उलझाए रखती है।

राकेश : अच्छा ! तुझे यह कैसे मालूम ?

सीमा : मालूम कैसे नही ? मैं रोज आती हूं। यहा पास ही मे तो हम रहते है।

राकेश : यहा पास ही में···!

सीमा : जी !

राकेश : किसकी बेटी हो ?

सीमा : डाक्टर विजय शर्मा की।

राकेश : अरे, फिर तो तुम कैप्टन अनूप शर्मा की भतीजी हो।

सीमा : हां-हां। आप उन्हें कैसे जानते है ?

राकेश : वह मेरा क्लास फैलो रहा है। हम दोनो साथ पढ़े हैं। मैं तेरी सहेली रेखा का चाचा हूं।

सीमा : ओह, फिर तो आप जयपुर वाले अंकिल है।

राकेश : हां।

सीमा : अंकिल, यह बडी आंटी बहुत तेज है। रेखा से तो हर काम करवाती है, वो तो करवाती ही है, बाबा को भी आराम से नहीं बैठने देती।

राकेश : मैं समझा नही।

सीमा : बुरा न माने तो अंकिल एक बात कहूं ?

राकेश : कहो।

सीमा : दिखता है, आप ज्यादा समझदार नही हैं।

राकेश : क्या !

सीमा : मुझे अभी तक आपने बैठने के लिए भी नही कहा ?

राकेश : ओह, सौरी। बैठो।

सीमा : थैंक यू। अंकिल, आप यदि यहां रहते तो आपको पता चलता कि बाबा से क्या-क्या काम करवाती है आंटी।

राकेश : क्या-क्या काम करवाती है ?

सीमा : गिनाऊं। देखो, बाबा कपड़े धोते हैं, रेखा के साथ बर्तन मांजते हैं, झाड़ू-पोचा लगाते हैं और बाजार से सारा सामान लेकर आते हैं। यहां तक कि उन्हे चक्की से आटा पिसवाकर भी लाना पड़ता है।

राकेश : अच्छा ! तो ये बातें तुझे रेखा बतलाती होगी ?

सीमा : क्यो ? मैं क्या अंधी हू ? आए दिन अपनी आंखो से देखती हूं यह

सब। अंकिल, यह तो रेखा है जो ढर सारे दुख झेलकर भी चुप रहती है...।

राकेश : ...उसकी जगह यदि तू होती तो ? तू क्या करती ?

सीमा : क्या करती ? मैं आंटी को वो मजे चखाती...वो मजे चखाती कि नानी याद करा देती। अंकिल, मैं अपने को और बाबा को इस तरह पिसने नहीं देती !

राकेश : वाह !

सीमा : कुछ भी हो अंकिल, मैंने इस तरह किसी से डरना नहीं सीखा...हां।

राकेश : पर, बड़ों के लिए, ऐसा नहीं कहते।

सीमा : क्यों न कहें ? बड़ों को भी तो बड़ों जैसी बातें कहनी चाहिए। रेखा को हर बात पर डांट देना, गंदी-गंदी गालियां देना और जब चाहे तब पीट देना—आप ही बताइए...क्या आंटी को यह शोभा देता है ?

राकेश : शोभा तो नहीं देता...लेकिन, हो सकता है इसके पीछे कोई कारण हो। रेखा कोई शैतानी करती हो।

सीमा . (हसती हुई) वाह अंकिल ! आपने भी खूब कहा ! जो लड़की अपनी सहेलियों के बीच बोलने से कतराए, वो शैतानी क्या खाक करेगी।

राकेश . तो वो कुछ गलती करती होगी।

सीमा ' (सोचने की मुद्रा में) हां, यह हो सकता है। इतने सारे काम करती है, गलती तो कहीं न कहीं हो जाती होगी।

राकेश : या फिर खेलने में ज्यादा मन रहता होगा।

सीमा : अंकिल ! लगता है, आप तो बिल्कुल बुद्धू है। खेलने के लिए उसके पास भला कहा टाइम ? आंटी उसे काम से मुक्ति दे, तब न !

राकेश : फिर पढ़ती कब है ?

सीमा : यही तो सोचने की बात है। स्कूल के सिवाय मैंने अंकिल, उसे कभी पढते नहीं देखा।

राकेश : फिर !

सीमा : फिर भी क्लास में फर्स्ट आती है। और एक इनका पप्पू—बिल्कुल हरामी। तीन साल से तीसरी मे फेल हो रहा है।

राकेश : और तू ?

सीमा : बस, यह मत पूछो अंकिल। मैं पास हो जाती हूं, यही बहुत है।

[महेश बाहर से लौट आता है]

महेश : (सीमा से) तू यहा क्यों आई है ?

सीमा : रेखा से मिलने।

महेश : वो स्कूल गई है।
सीमा : यह तो अकिल पहले ही बता चुके।
महेश : फिर यहा क्या कर रही है ?
सीमा : बाबा को देख रही हूं।
महेश : उनसे क्या काम है ?
सीमा : है, कोई काम।
महेश : वे यहा नही हैं।
सीमा . तो, कोई बात नही।
महेश : अब जा यहा से।
सीमा : जाती हूं। (जाती-जाती व्यंग्य से) 'जा यहां से'···हूं···! (कहती हुई चली जाती है)
महेश : बड़ी ढीठ है। रेखा को यही तो शैतानी करना सिखलाती है।
राकेश : भाभी नही आई ?
महेश : आ रही है।
राकेश : बड़े पापा की तबियत इन दिनो कुछ ठीक नही है क्या ?
महेश : क्यों, इस लड़की ने कुछ कहा ?
राकेश . नही तो। यहां जब बैठे हुए थे, मुझे वे कुछ बुझे-बुझे-से दिखाई दिए।
महेश : तुझे पहचान तो लिया ?
राकेश : यह कोई पहचानना नही है। जब से पापाजी का देहान्त हुआ है, वे कुछ खोए-खोए-से रहने लगे हैं।
महेश : तूने यह कैसे जाना ?
राकेश . उनकी खामोशी देखकर। लगता है, कोई ऐसी अव्यक्त पीड़ा है जो अन्दर ही अन्दर उन्हें खोखला बना रही है।
महेश : तुझे कोई भ्रम हो गया होगा। बड़े पापा तो अपनी मस्ती मे मस्त है।
राकेश : पर मुझे ऐसे नही लगे। और कुछ नही तो गोपाल भैया की याद उन्हे जरूर कचोटती होगी।
महेश : नही रे ! गोपाल भैया की घटना घटे ही सालों बीत गए।
राकेश : बात तो कुछ न कुछ है।
महेश : कुछ भी नही है। हां, कभी-कभी बड़ी मां को याद करके उदास जरूर हो जाते है। खैर, तू तो यह बता, अम्माजी कैसी है ?
राकेश : ठीक हैं।
महेश : इस बार तो तू पूरे दो साल के बाद आया है।
राकेश : दो साल कैसे ? पिछली होली पर तो मैं होकर गया था। याद नही, भाभी की इसी लीला बहन के यहा होली खेलने चले थे।

महेश : (याद करता हुआ) हा···हा···फिर भी काफी अरसा हो गया।

राकेश : पर, इस अरसे मे, लगता है, यहा का सारा नक्शा ही बदल गया।

[कमला का प्रवेश]

कमला : अजी, क्या बदल गया ?

राकेश : ओह, भाभी ! नमस्ते।

कमला : नमस्ते ! आज सूरज किधर से निकल आया ?

राकेश क्यो ? मेहरबानी तो है ?

कमला - रहने दो। पहले यह बताओ, अम्माजी कैसी हैं ?

राकेश - बिल्कुल ठीक हैं।

कमला : और, मेरी देवरानी ?

राकेश : वो भी मजे मे। पर, मुन्ना अब जरा नटखट हो गया है। बहुत तग करने लगा है।

कमला : आखिर बेटा किसका है ? तुम भी तो किसी को परेशान करने मे बाज नही आते।

राकेश : मैं ?

कमला · और कौन ? आने की इत्तला तक नही करी और चले आए यो एकाएक। यह किसी को परेशानी मे डालने वाली बात नही है।

राकेश : लेकिन इत्तला तो भेजी है मैंने। क्यो भाई साहब, मेरा कागज नही मिला आपको ?

महेश : भई, कागज तो तेरा आया था···ध्यान से निकल गया।

राकेश : (कमला से) अब मुझे ताना मत देना।

कमला : दूगी क्यों नही ! मुझे भी तो अलग से कागज लिख सकते थे।

राकेश : हा, यह गलती जरूर हुई। आगे से बस आपको ही कागज लिखूंगा।

कमला : मुझे लिखोगे, तो जवाब भी मिलेगा। इन्ही से ही लिखवाऊंगी।

महेश : अरी भाग्यवान। कितनी बार कह चुका हू, कागज-वागज लिखना मेरे वश का नही है।

कमला : हा-हा, आपको तो केवल सोना आता है।

महेश : देख पप्पू की मा, मुझे बेमतलब का बदनाम मत कर। सोने को भला वक्त ही कहा मिलता है।

कमला : यह लो ! कुम्भकरण की नीद सोते हैं और कहते है, वक्त ही कहा मिलता है ! राकेश सच बताना, तुम जब आए, ये क्या कर रहे थे ?

राकेश : अन्दर कमरे मे चद्दर ओढ़कर खुर्राटे भर रहे थे।

कमला : अब बोलिए।

महेश : तुम तो हर समय मेरे पीछे ही लगी रहती हो।

राकेश : भाईसाहब, ये नही तो और कौन पीछे लगेगी ?

कमला : यह तुमने ठीक कहा ।

राकेश : खैर, आप अभी सुबह-सुबह लीला के यहां कैसे हो आई ?

कमला : क्या बताऊ ? उसके छोटे बेटे की बर्थ डे पर आज शाम को पार्टी है। सोचा थोड़ा काम मे हाथ बंटा आऊ। वैसे भी तुम जानते हो, थोड़ा बहुत उसी के यहां आना-जाना है। क्या करू ? तुम्हारे भाईसाहब को तो सोने से ही फुरसत नही। ऑफिस से आए नहीं कि लेटने की सूझती है।

राकेश : ऐसी हालत में बाहर का काम कौन करता होगा ?

कमला : कौन करे ? नजला मेरे पर ही गिरा रहता है। बाजार जाते-जाते थक जाती हूं। इनसे तो एक पानी का लोटा भी नही भरा जाता।

राकेश : मुझे तो लगता है, आपको भाईसाहब की नीद से ईर्ष्या हो गई है।

कमला : ईर्ष्या की बात नही है। यह हकीकत है। पिछले बुधवार को···। **(महेश की ओर देखकर कहती-कहती रुक जाती है)**

महेश : कह दे···कह दे···।

कमला : ···कह दू···।

महेश : ·· कह दे।

राकेश : क्या हुआ ?

कमला : तुम्हे सुनकर हसी आएगी। पिछले बुधवार को हम किसी के यहां डिनर पर गए। डाईनिंग टेबल पर सब खाना खा रहे थे। पता नही, निद्रा देवी ने, चुपके से कब आकर, इन पर डोरे डाले कि कौर इनके मुह में ही पड़ा रह गया।

राकेश : सच भाईसाहब !

महेश : तेरी भाभी तो तिल का तहाड़ बना देती है।

कमला : इसमें तिल का तहाड बनाने की क्या बात है ? झूठ कह रही हूं तो बोलो। नीद लेते-लेते कुर्सी से नीचे नही गिर पड़ते !

महेश : हा···तूने बचा लिया !

कमला : और नही तो। मैं पास में नही होती तो मुह के बल गिरते।

राकेश : **(चुटकी लेते हुए)** तब तो भाईसाहब, नीद लेने का यह रिकार्ड तो आपका शायद ही कोई तोड़े।

कमला : किसकी हिम्मत, जो ऐसी गुस्ताखी करे।

महेश : अब चुप भी रहोगी या नही।

राकेश : **(बात को मोड़ देते हुए)** अरे हां, बडे पापा किधर चले गए ?

कमला : अन्दर अपने कमरे मे बैठ गए होंगे जाकर।

राकेश : भाईसाहब, इन दोनों में से एक पोर्शन किराये पर क्यों नहीं उठा देते !

महेश : नहीं रे। किराये पर दे दें तो फिर कोई खाली ही नहीं करेगा। यही ठीक है। उठना-बैठना यहां हो जाता है, बाकी सारे काम बड़े पापा के पोर्शन में। होते हुए जगह की तंगी क्यों देखें !

राकेश : तो ठीक है। अब तो बस, बड़े पापा अधिक अकेले में न रहें, यह ध्यान जरूर रखें।

महेश : कोशिश तो यही रहती है। पर करें क्या ?

कमला : वे तो स्वयं हमसे दूर रहने का बहाना ढूंढते हैं।

महेश : सच तो यह है, हमसे अलग रहकर ही वे अधिक खुश हैं।

राकेश : पहले तो ऐसे नहीं थे। सबसे हिलमिलकर रहते थे। पता नहीं, अब ऐसी क्या बात है ?

कमला : बात क्या है ? बुढ़ापा रंग दिखाए बिना नहीं रहता। उम्र के साथ-साथ बुद्धि भी सठिया जाती है। तभी तो छोटी-छोटी बातों पर बिदक उठते हैं। (कहती-कहती उठकर अन्दर चली जाती है)

महेश : यह सब उस नन्दू की सीख है।

राकेश : नन्दू कौन ?

महेश : (स्मरण कराते हुए) नहीं जाना ! अरे उसका बेटा तेरे साथ ही तो पढ़ता था।

राकेश : मेरे साथ पढ़ता था ?

महेश : हां-हां। तू भूल रहा है। गोवर्द्धन गहलोत का मकान देखा है ?

राकेश : गोवर्द्धन गहलोत का···वो भैरूंजी वाली गली में।

महेश : हां···उसके ठीक सामने वाला घर।

राकेश : ओह, जान गया···जान गया। वो निखट्टू मेवालाल, जिसका एक दफे, पतंग उड़ाने की बात पर, रामप्रताप के साथ झगड़ा हो गया था।

महेश : हां···वही। उसी मेवालाल का बाप। बड़े पापा के साथ का है वह।

राकेश : वो मेवालाल अब करता क्या है ?

महेश : करता क्या है—हेराफेरी। खुले शब्दों में कहूं—अफीम की तस्करी। तभी तो नन्दू उसकी कमाई पर फूला नहीं समा रहा।

[कमला अन्दर से पानी की ट्रे लेकर आती है]

कमला : बस, पूछो क्यों ? ऐंठा-ऐंठा फिरता है।

महेश : खुद तो साला पूरी उम्र चपरासी रहा और अब अपने को लाट साहब का बाप समझता है।

कमला : (पानी के गिलास मेज पर रखती हुई) उसी की बातें सुन-सुनकर बड़े पापा न जाने, मन में, कैसे-कैसे सपने संजोने लगे हैं। यह सोच-सोचकर दुबले हुए जा रहे हैं कि नन्दू के घर पर मन बहलाने को टी० वी० है, हमारे यहा क्यों नही ?

राकेश : यह तो कोई बात नही हुई।

कमला : अब तुम्ही बताओ, तुम्हारे भाईसाहब की जेब ऐसी तो है नही कि हर समय भरी रहे। टेलीविजन के लिए क्या हमारा मन नही करता !

राकेश : क्यो नहीं ?

कमला : पर करें क्या ? कहा से लाए पैसा ? इतने बडे घर में क्या कुछ नही चाहिए ?

राकेश : मैं समझता हू भाभी।

कमला : फिर भी बडे पापा के लिए हम किसी चीज की कमी नहीं रखते।

राकेश : कमी रखने की बात ही क्या है ?

कमला : अच्छे से अच्छा खाना···बढ़िया से बढिया कपड़ा···।

महेश : ···मैले कपड़े तो तेरी भाभी को वैसे भी पसन्द नही हैं।

कमला : और न ही, बडे पापा पहनते हैं।

[बाहर से आवाज आती है —'बीबीजी']

कमला : धोबी आ गया।

महेश : भीतर आ जा।

[धोबी कपड़ों की गठरी लिये आता है]

धोबी : बीबीजी, कपडे ले लीजिए।

[कहता हुआ फर्श पर बैठकर गठरी खोलता है]

कमला : (महेश से) आप जरा इससे नौ कपड़े ले लीजिए, गिनकर। तब तक मैं अन्दर से पैसे लेकर आती हूं।

[प्रस्थान]

धोबी : (कपड़े छांटकर देता हुआ) ये लो बाबूजी। पूरे नौ हैं। अच्छी तरह गिन लेवें।

महेश : (लापरवाही से) ठीक है···ठीक है।

[कपड़े उठाकर अन्दर ले जाता है]

राकेश : (धोबी से दबी आवाज में) अरे सुन, कभी हमारे बड़े पापा के कपड़े भी धोने के लिए ले जाता है ?

धोबी : (सोचता हुआ) उन बड़े बाबाजी के ?

राकेश : हा।

धोबी . उनके कपड़े तो बीबीजी ने कभी नही दिए। मैंने तो उनको हमेशा मैले और फटे कपड़ो में ही देखा है।

राकेश अच्छा।

धोबी ' हा। आज भी मैले ही पहन रखे है।

राकेश (आश्चर्य से) आज तूने उनको कहा देखा ?

धोबी अभी उस नुक्कड वाले मिलक बूथ पर। हाथ में बर्तन लिये लाइन में खड़े है।

राकेश ' दूध के लिए ?

धोबी : हा। लगता है, डेरी का दूध अभी तक आया नही। पर, बाबू साहब, आप को···न ?

राकेश : मैं इन बाबूजी का छोटा भाई हू और उन बड़े बाबाजी का भतीजा।

धोबी : और, वो बच्ची !

राकेश : वो बाबाजी की पोती है, हमारी भतीजी।

धोबी : उसके मां-बाप ?

राकेश : दोनों ही नही रहे।

धोबी तभी मैं कहू, बीबीजी के मन मे उसके लिए ममता क्यो नही।

राकेश : अच्छा, तुमने यह कैसे जाना ?

धोबी : अजी मैं आए दिन उसे यहा बीबीजी के हाथो पिटती देखता हू।

[कमला अन्दर से आती है]

कमला . (पैसे देती हुई) देख, ये तो ले इन नौ कपडो के पैसे। (बगल में दबाए कपड़े नीचे डालती हुई) और, ये सारे धोकर लाने है। (दो कपड़े अलग से छांटकर दिखलाती हुई) इनमे ये 'दो' बड़े पापा के है।

धोबी : (अविश्वास के साथ) उन बड़े बाबाजी के !

कमला : हां···। और, कान खोलकर सुन ले। ये एकदम साफ धोकर लाने है। कोई कसर रह गई, तो जानता है मुझे, एक पैसा नही दूंगी।

धोबी : ठीक है।(कपड़े समेटता है कि उन दोनों कपड़ों को देखकर) बीबीजी-बीबीजी ! ये तो दोनो फटे हुए हैं। जगह-जगह से मुंह निकल रहे हैं इनके।

कमला : फाड़ लाए होंगे कही से। तू जरा ध्यान से धोना।

धोबी : अच्छा बीबीजी।

[कहकर गठरी उठाकर चल देता है]

कमला : (महेश को आवाज देती हुई) अजी सुनते हो ?

महेश : (भीतर से) क्या है ?

कमला : (ऊंची आवाज में) चूल्हे पर जरा पानी का भगोना चढ़ा देना। मैं

दूध लेकर आती हूं।

महेश : (भीतर से ही) ठीक है। जल्दी लौटना।

कमला : (राकेश से) मैं भी कितनी लापरवाह हूं। चाय की तरफ ध्यान देना तो भूल ही गई।

राकेश : इतनी जल्दी भी क्या है ? बन जाएगी। मैं कोई मेहमान तो हूं नहीं।

कमला : फिर भी, चाय का टाइम तो हो ही गया। मैं अभी आती हूं। (कहती हुई बाहर जाने लगती है कि सामने से हीरालाल को आते देखकर) यह लो'''आज तो हमारे अहोभाग्य'''बड़े पापा ही दूध ले आए। (हीरालाल के हाथ से दूध का बर्तन लेती हुई) कितनी बार कहा''' आप तो बैठकर आराम किया करें'''दूध तो मैं ही ले आया करूंगी''' पर मेरी कोई सुने तब न ! (अन्दर की ओर जाती-जाती) मैं तो कहती-कहती हार गई।

[प्रस्थान]

राकेश : (हीरालाल से) आइए बड़े पापा।

[हीरालाल जूती एक तरफ खोलकर चुपचाप बेमन से आकर कुर्सी पर बैठता है]

राकेश : अच्छी तरह'''आराम से बैठिए। दूध लेने गए थे ?

हीरालाल : हां ?

राकेश : रोज लाते हो ?

हीरालाल : '''(गर्दन हिलाकर 'हां' भरता है)

राकेश : यह तो बहुत ही अच्छी बात है। दूध लाने के बहाने थोड़ा घूमना हो जाता है।

[महेश अन्दर से आता है]

महेश : राकेश, चाय बने तब तक तू मुंह-हाथ धो ले।

राकेश : इन कामों से तो मैं स्टेशन पर ही निपट आया।

महेश : नहा भी आया ?

राकेश : नहाया तो नहीं।

महेश : तो फिर ऐसा कर'''नहा ले।

राकेश : हां'''यह ठीक है। अभी लो। (कहता हुआ उठकर अदर जाने लगता है)

महेश : उधर कोने वाले बाथरूम में जाना। वहां पानी जरा ठीक आता है।

राकेश : (जाते-जाते) अच्छी बात है।

[प्रस्थान]

महेश : (हीरालाल से) आप यहां क्यों बैठे हैं ? इधर बाहर वाले बाथरूम में

जाकर निपट क्यों नही आते ? खाली पड़ा है। जाइए···यह बाल्टी भी उठा लें···और सुनिए···राकेश को ज्यादा मुह मत लगाना···वो कुछ भी कहे, ध्यान मत देना···।

[हीरालाल बिना कोई जवाब दिए बाल्टी उठाकर बाहर चला जाता है]

चन्द्रकान्त : (बाहर से आवाज देता हुआ) महेश बाबू अन्दर हैं।

महेश : कौन ! अन्दर आ जाइए।

चन्द्रकान्त : (प्रवेश करके) नमस्ते।

महेश : नमस्ते। कहिए···।

चन्द्रकान्त : ···हम दिल्ली से आए हैं। सुमनेश की बहिन कमलाजी···।

महेश : ···हां-हां···यही रहती है। मेरी धर्मपत्नी है।

चन्द्रकान्त : और, हमारी धर्मपत्नी है सुमनेश की सास लाजवन्ती···यानि कि हम लाजवन्ती के पति है और कमलाजी के भतीजो के नाना···यानि कि चन्द्रकान्त।

महेश : अच्छा-अच्छा ! आपकी चर्चा तो कई बार होती है।

चन्द्रकान्त : क्यो नही···क्यो नही ?···यानि कि हम जहां जाते हैं, चर्चा का विषय तो बन ही जाते हैं। अब देखिए न, कमलाजी के लिए यह पत्र लेकर आए हैं···यानि कि यह भी हमारी चर्चा ही छेड़ेगा।

महेश : क्यों नही ? (चन्द्रकान्त से पत्र लेकर देखता है)

चन्द्रकान्त : सुमनेश ने लिखा है। अपने हाथ से·· यानि कि अपनी बहन के नाम।

महेश . बिलकुल यही बात है। (कमला को आवाज देता हुआ) अरी सुनती हो !

कमला : (भीतर से) क्या है ?

महेश : देखो कौन आए हैं ?

कमला : आती हूं। (प्रवेश करती हुई) कौन आए है ? अरे, लालाजी ! आप कब आए ?

चन्द्रकान्त : यही कोई सोलह घण्टे पहले···यानि कि कल शाम को।

कमला : तो अब तक कहा रहे ?

चन्द्रकान्त : जहा रहना चाहिए था···यानि कि अपने साले साहब के ससुराल में।

महेश : बहुत अच्छा किया आपने।

चन्द्रकान्त : इससे भी अच्छा किया कमलाजी के भाई ने···यानि कि हमारे दामाद साहब ने जिन्होंने फरमाया कि हम यहां आकर आपसे अवश्य मिलें···यानि कि आपकी सेवा में यह पत्र प्रस्तुत करें।

कमला : (महेश के हाथ से पत्र लेती हुई) कुछ दिन तो रहेंगे ?

चन्द्रकान्त : नहीं-नही । हमें आज ही वापस जाना है। सुमनेश की सास का''' यानि कि उषा की मम्मी का यही आदेश मिला हुआ है।

कमला : इतनी जल्दी !

चन्द्रकान्त : क्या करें ! धर्मपत्नी के आदेश की अवहेलना नही कर सकते'''यानि कि हमारा रुकना असम्भव है।

महेश : कोई बात नही । (कमला से) देखो क्या लिखा है पत्र में ?

चन्द्रकान्त : (कमला से पत्र लेकर महेश के हाथ पकड़ाता हुआ) अजी, आप पढ़िए न !

कमला : हा-हां'''आप ही पढ़िए । तब तक मैं कुछ नाश्ता लेकर आती हूं ।

चन्द्रकान्त : न'''न'''न'''! इसके लिए आप कोई कष्ट न करें'''यानि कि हम अभी-अभी नाश्ता करके आ रहे हैं। आप बैठकर पत्र सुनिए ।

कमला : लालाजी, यह बात तो ठीक नहीं है । पहली बार तो आप हमारे यहा आए और ऐसे ही चले जाएं, यह हमें अच्छा नही लगेगा । कुछ-न-कुछ तो ले लेते ।

चन्द्रकान्त : अजी, इसमे औपचारिकता की कोई बात नही है'''यानि कि आप (महेश से) अब पत्र पढ़िए ।

महेश : (पत्र खोलकर पढ़ता हुआ) यह तो बहुत खुशी की खबर है ।

कमला : (उत्सुकता से) क्या लिखा है ?

महेश : सुनते ही कही उछलने मत लग जाना ।

कमला : अब ज्यादा बातें न बनाओ । पढ़कर सुनाइए न !

चन्द्रकान्त : बिलकुल ठीक फरमाया आपने'''यानि कि पहले काम की बात ।

महेश : (पत्र पढ़कर सुनाते हुए) पूज्यनीय कमला जीजी, प्रणाम । यह जानकर आपको खुशी होगी कि मैं और आपकी भाभी'''।

चन्द्रकान्त : '''उषा'''यानि कि मेरी बेटी नम्बर छ ।

महेश : '''अगले शनिवार को यहां से रवाना होकर रविवार की सुबह आपके यहां पहुंच रहे है ।

कमला : सच !

महेश : हा । और लिखा है कि बच्चे भी साथ होंगे ।

चन्द्रकान्त : बच्चे'''यानि कि लाजवन्ती के दोहिते'''हमारी उषा के लाड़ले''' बब्बू और बबलू ।

कमला : यह हुई न बात । मेरे भतीजे भी आ रहे है ।

महेश : और सुनो । लिखा है—स्टेट बैंक की ऑडिट के सिलसिले मे आठ-दस दिन मुझे वही ठहरना है । तब तक ये सब भी वहां रह लेंगे । आप जीजाजी को लेकर उस रोज स्टेशन पर आना न भूलना । लीला को

भी कह देना। आपका प्यारा छोटा भाई'''।

कमला : '''सुमनेश'''।

चन्द्रकान्त : '''यानि कि आपके (महेश से) साले और हमारे दामाद साहब।

कमला : वाकई, यह तो बहुत खुशी की खबर है। लालाजी आप तो जाकर बोल देना, हम बेसब्री से उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

चन्द्रकान्त : क्यों नहीं'''यानि कि अवश्य कहेंगे। अच्छा, अब हमें प्रस्थान की अनुमति दीजिए।

महेश : '''यानि कि अब यहां नहीं ठहरेंगे?

चन्द्रकान्त : ठीक कहा आपने'''यानि कि अब हमें जाना है। (उठते हुए) अच्छा, नमस्ते।

महेश
कमला : नमस्ते।

[चन्द्रकान्त का प्रस्थान]

महेश : लालाजी हैं बड़े रंगीले।

कमला : होंगे! मुझे तो अब काम की चिन्ता लग गई। अगला रविवार तो आया। अब दिन ही कितने हैं?

महेश : लीला को बुलाकर अभी से तैयारियां चालू कर दो।

कमला : उसको तकलीफ नहीं दूंगी। उसे बाल-बच्चों से ही फुरसत नहीं।

महेश : फिर अकेली यह सब कैसे करोगी?

कमला : अकेली क्यों हूं? मेरी रेखा कहां मर गई? उसे साथ लगाए रखूंगी।

महेश : (धीमी आवाज में) कल तक शायद राकेश भी चला जाए।

कमला : ऐसे भाग्य कहां हैं हमारे?

महेश : क्यों?

कमला : अजी यह आया हुआ तूफान उथल-पुथल मचाए बिना चला जाए, मुझे विश्वास नहीं होता। क्या समझे? मैं चली।

[कमला फुर्ती से अन्दर जाती है कि पीछे-पीछे महेश भी उठ जाता है और पत्र समेटता हुआ अन्दर चला जाता है। कुछ ही क्षणोपरान्त बाहर से सीमा आती है और अन्दर की ओर झांकने के बाद रेखा को पीछे से इशारा करती है—अन्दर आने का]

सीमा : तुम्हारी आंटी कहीं अन्दर ही टेढ़ी हो रही है। यहां तो शान्ति है।

रेखा : (डरी-डरी सी प्रवेश करती हुई) धीरे बोल। कहीं सुन लिया तो मेरी खैर नहीं है। तुझे तो कुछ नहीं कहेगी, मेरे पर बिगड़ उठेगी।

सीमा : वो तो बिगड़ेगी ही।

रेखा : क्या !

सीमा : डरती क्यों है ? स्कूल से इतनी जल्दी लौट आने पर क्या वो तुझ पर प्यार जताएगी ?

रेखा : ऐसी किस्मत कहां है मेरी ?

सीमा : तुझे देखते ही क्या बोलेगी आंटी ?

रेखा : क्या बोलेगी ।

सीमा : बोलेगी—(कमला की नकल उतारती हुई) मरी वापस कैसे चली आई ?

[रेखा डर के मारे थर-थर कांप रही है और सीमा को चुप रहने के लिए उसके आगे हाथ जोड़ती है]

सीमा : चुप क्यों है ? मरी बतलाती क्यो नही ?

रेखा : (न चाहते हुए भी) स्कूल की आज छुट्टी है ।

सीमा : छुट्टी ! मरी वो फिर किस बात की ?

रेखा : पिकनिक की ।

सीमा : मरी झूठ तो नही बोल रही ?

रेखा : नही । स्कूल के नोटिस बोर्ड पर यही लिखा है ।

सीमा : मरी झूठ बोली तो जानती है, जीभ काटकर हाथ मे दे दूगी ।

[रेखा और आगे न बोलने के लिए प्रार्थना करती है]

सीमा : मरी अब यह री-री क्या कर रही है ? बस्ता रख यहा और घर का काम कर । तेरे चाचाजी को अभी आफिस जाना है । वो पडे उनके बूट । जल्दी से पालिस कर । मरी सुना नही, मैं क्या कह रही हूं ?

[इस बीच महेश और कमला अन्दर से आते है कि यह नजारा देखकर एक ओर छुपकर खडे हो जाते है—चुपचाप)

रेखा : (बूटों को एक तरफ रखकर) अब तू यह नाटक बन्द कर । वरना मेरी जान आफत मे आ जाएगी ।

सीमा : (हसती हुई सहज रूप में आकर) डर गई ? यही तो विडम्बना है । तुम्हारी रगो में, पता नही, आक्रोश क्यो नही उबलता ?

रेखा : बेबसी ने जो घेर रखा है ।

सीमा : मैं नही मानती । डटकर मुकाबला किया जाय तो कभी कोई अन-चाही स्थिति पैदा ही न हो ।

रेखा : ये ऐसी बातें तुझे कौन सिखाता है ?

सीमा : मेरे पापा ! एक बात बता, तुम और बाबा आखिर इतने डरे-डरे क्यों रहते हो ?

रेखा : अब तू चुप हो जा ।

सीमा : नही ! मेरे पापा अक्सर कहते हैं कि एक वो समय भी था, जब बाबा की आंखें खरगोश की तरह चौकन्नी रहा करती थी ।

रेखा : कभी रही होगी । पर, आज तो खरगोश हमारी डरी हुई चेतना का सिम्बल बना हुआ है ।

सीमा : करैक्ट । यह तुमने कहां पढ़ा ?

रेखा : एक किताब में ।

सीमा : इतना सब कुछ समझते हुए भी आटी की झिड़कियां सहे जा रही हो ?

रेखा : बदनसीबी है । क्या करूं ?

सीमा : क्या करूं ?

[महेश और कमला का प्रवेश]

महेश : यह क्या हो रहा है ?

सीमा : कुछ नही ।

कमला : तुम इसे क्या सिखाने आती हो, मुझे सब मालूम है ।

सीमा : क्या सिखाने आती हू ?

कमला : शर्म नही आती झूठ बोलते ? जा यहां से ।

महेश : मिलने दे तेरे पापा को । कहूगा—ऐसी नादान बेटी को घर में कैद करके रखा करो ।

सीमा : क्यों ? मैं कोई पागलखाने से भागी हुई हूं ।

कमला : बहुत बक-बक करती है । उड़नछू हो यहा से ।

सीमा : जाती हूं । (जाती हुई रेखा को हिम्मत दिलाती है) रेखा, डरियो मत ।

महेश : भाग यहा से ।

[सीमा का प्रस्थान]

कमला : क्यों री, अपनी सहेली को बुलवाकर मेरी नकल उतरवाती है ? मरी कान खोलकर सुन ले । आज के बाद मैंने तुझे इसके साथ फिर कभी देखा तो मार-मारकर मरी का भूसा बना दूंगी । समझ गई !

रेखा : जी ।

कमला : जी-जी—नही, आजकल तेरे बहुत पर निकलने लग गए हैं । (कान पकड़ती हुई) क्यों ? तू भी उसकी तरह मरी रंग बदलना सीख गई ।

महेश : (रेखा के कान कमला के हाथ से छुड़वाते हुए) अभी यह सब छोड़ो । (रेखा को दो रुपये का नोट पकड़ाते हुए) यह ले पैसे । तू जा, दही लेकर आ ।

कमला : पहले यह वस्ता खिसका सोफे के नीचे। (रेखा बस्ता सोफे के नीचे खिसकाती है) अब जा। कुलड़े में डलवाकर लाना।

महेश : जानती है, कहा मिलेगा ?

कमला : यह सव जानती है।

महेश : (समझाते हुए) रामदेवजी का मन्दिर देखा है।

रेखा . हां।

महेश · उसके वगल में ही एक दहीवाला वैठता है।

कमला : जान गई ?

रेखा : जी।

कमला · तो जा, लेकर आ।

[रेखा चली जाती है]

महेश : तुम हर जगह अपना असली रूप मत दिखाया करो।

कमला : क्या ? अव रहने दो अपनी होशियारी। अपने भाई को आवाज दे दीजिए। मैं चाय लेकर आती हूं।

[प्रस्थान]

महेश : (आवाज देता है) राकेश !

राकेश : (अन्दर से) आया भाईसाहब।

महेश : जल्दी करना। चाय तैयार हो गई है।

राकेश : वस, अभी आया। (अन्दर से आते हुए) भाईसाहव, पानी तो यहां वहुत ठण्डा है। कोई कैसे नहाता होगा ?

महेश : वाहर से आया है न, इसलिए ठण्डा लग रहा है। वरना मैं और तेरी भाभी तो हमेशा इसी पानी से नहाते है।

राकेश : और वडे पापा ?

महेश : उनकी वात छोड़। उन्हें गरम पानी न मिले तो पूरे घर को सिर पर उठा लें।

राकेश : वैसे भी, अब उनका पहले जैसा शरीर नही रहा।

महेश : देख, राकेश, सच पूछे तो हमें यह पसन्द ही नही कि वडे पापा रोज-रोज नहाएं। पका हुआ शरीर है। न जाने कब क्या हो जाए।

राकेश : आपका सोचना सही है।

महेश : फिर, तू तो समझदार है, जानता है, जाडे की दूधिया धूप में, अनचाही वातें, कभी भी अपना घर कर सकती है। इसी डर से तेरी भाभी उन्हें रोज नहाने से मना भी करती है।

राकेश : भाईसाहब, रोज नहाने की बात यहां नही है। मुझे तो किसी और बात का डर लग रहा है।

महेश : किसी और बात का ? मैं समझा नही।

राकेश : आप नही जानते यह तो मुझे पता नही। मुझे उनकी खामोशी में ज्वालामुखी की कोई ऐसी चिनगारी सुलगती दिखाई दे रही है, जिससे कभी भी विस्फोट हो सकता है।

महेश . नही रे ! तूने बड़े पापा को कभी समझा ही नही। अरे, उन्होंने तो अपनी जिन्दगी सदा सलीके से जी है।

राकेश : पहले कभी जी होगी। अब तो शायद दर्पण में पड़ी अपनी छाया को भी न पहचानते हों।

महेश ' तू भी कैसी बातें करता है ? अरे, बड़े पापा को मुझसे अधिक कौन जानेगा !

[कमला चाय लेकर आती है]

कमला : भाई-भाई में यह क्या खुसर-फुसर हो रही है ? लो, अब गरम-गरम चाय पीओ।

[कमला कपों मे चाय डालती है]

राकेश : बड़े पापा को तो बुलाओ।

कमला ' उनकी चिन्ता न करो। उनका निपटना उनके अपने हिसाब मे होता है। चाय वे तभी पिएंगे, जब उनका मन करेगा।

महेश : (कप उठाकर) तेरी भाभी ठीक कहती है। बड़े पापा तो अपने मन के राजा हैं।

[इसी समय बाहर की तरफ से हीरालाल आता हुआ दिखाई देता है]

कमला : उधर देखो। तुमने याद किया और वे आ गए।

राकेश : (हीरालाल से) यहां मेरे पास आइए। वहां नही, यहां बैठिए।

[हीरालाल सहमा हुआ-सा राकेश के पास जाकर बैठता है]

राकेश : (कप लेकर हीरालाल को पकड़ाते हुए) लो, चाय पीओ।

[कप हाथ मे लेते ही हीरालाल के हाथ कांपने लग जाते हैं]

राकेश : पीजिए न।

महेश : (उपेक्षा से) अपने आप पी लेंगे।

[हीरालाल के हाथ में कंपकंपी बनी रहने से कप डगमगा रहा है]

राकेश : इच्छा नहीं है तो रहने दीजिए।

कमला : **(व्यंग्य से)** इच्छा क्यों नहीं है ?

महेश : रोज तो पीते हैं।

कमला : **(फड़कड़ाहट के साथ)** पीते क्यों नहीं ?

महेश : **(थोड़ा चीखता-सा)** पीजिए।

[महेश के कर्कश बोल सुनते ही हीरालाल अचानक घबरा जाता है और उसके डगमगाते कप से चाय छलककर नीचे गिर जाती है]

कमला : **(आवेश में)** देख लिया। इसीलिए हम इन्हें साथ में चाय पीने के लिए नहीं कहते।

महेश : अब हो गया न फर्श गन्दा। कितना बुरा लगता है।

कमला : सच कहती हूं, फर्श साफ करते-करते मेरे हाथ रह जाते है।

राकेश : खैर, कोई बात नहीं **(हीरालाल से कप लेकर मेज पर रखता हुआ)** बड़े पापा, आप थोड़े दिनों के लिए मेरे साथ जयपुर चलिए न !

महेश : **(उपेक्षा के भाव दर्शाता हुआ)** नहीं-नहीं। ये यहीं ठीक है।

राकेश : ऐसी क्या बात है ?

महेश : वहां तुम लोगों के साथ इनका निभना मुश्किल है।

राकेश : क्यो ? इसमे निभने न निभने की क्या बात है ? वातावरण बदलने से बहुत फर्क पड़ेगा।

महेश : अरे कुछ नही पड़ेगा। इनकी दिनचर्या ही कुछ अजीब है।

राकेश : पर एक दफे इन्हें 'हां' तो कहने दीजिए।

महेश : तो पूछ ले। **(हीरालाल से)** क्यों, जयपुर जाएंगे ?

[हीरालाल चुप]

कमला : और तो कुछ नहीं, वहा अम्माजी के लिए बेमतलब की परेशानियां बढ़ जाएंगी।

महेश : यह ठीक कहती है। यहा तो सब जमा-जमाया है। हर समय इनकी देखभाल के लिए यह तैयार रहती है।

राकेश : क्यों बड़े पापा, चलेंगे न हमारे यहां ? वहां आपका मन न लगे तो वापस आ जाना। कुछ दिन तो हमारे सिर पर भी हाथ रखिए। चलेंगे न !

हीरालाल : हां'''चलूगा। तू मुझे अपने साथ ही ले चलना।

राकेश : (खुश होता हुआ) हां'''हां, अपने साथ ही ले चलूगा।

महेश . क्यों, यहा आपको कोई तकलीफ है ?

[हीरालाल चुप]

कमला : (नाक सिकोड़ती) कभी कोई हुई हो, तो कहें।

महेश : बताइए न !

हीरालाल : क्या बताऊ ? बोलने की अब मुझमें शक्ति नहीं रही।

राकेश : रहने दीजिए न भाईसाहब।

महेश : अरे पूछने में क्या हर्ज है ? ये बतावें तो सही, यहा इन्हे क्या दुख है ?

कमला कुछ जी मे है तो कह दीजिए।

हीरालाल मुझे कुछ नही कहना। (राकेश से) तू मुझे आज ही यहां से ले चल।

कमला : वाह ! यह क्या बात हुई ? यह तो बताइए, यहा आपको तकलीफ क्या है ? कोई घुटन महसूस हो रही है।

[हीरालाल चुप]

महेश : अब चुप क्यों रह गए।

राकेश : मैं कहता हूं, रहने दीजिए।

कमला : नही-नहीं, रहने क्यों दे ? लोग बातें नही बनाएगे कि गोद लिये हुए बेटे ने आराम से नहीं रखा।

महेश : (समझाने के लहजे मे) फिर रेखा यहा पढती है। इनके बिना वो भी नही रहेगी।

राकेश : तो वो भी साथ चली चलेगी। एक दफे, हफ्ते-दस दिन के लिए ही सही, इन्हे जाने तो दीजिए।

महेश : पर, जाकर करेंगे क्या ? बेवजह स्कूल की पढाई खराब होगी उसकी।

हीरालाल : राकेश, हमे यही रहने दें।

महेश : जाने की यदि ज्यादा ही मन मे है तो फिर आप जानें।

हीरालाल : मुझे नही जाना, बस।

कमला : बस क्यो ? हम जाने से रोक नही रहे। जाने की वाकई इच्छा है तो कह दीजिए।

हीरालाल : (झुंझलाहट के साथ) मुझे कुछ नही कहना। ढकी बात को ढकी ही रहने दो।

कमला : ढकी क्यों रहने दो। हटा दो परदा। पीट दो ढिंढोरा। (कहती हुई लाल-पीली होती कुढ़ती-सी अन्दर चली जाती है)

हीरालाल : राकेश, हम यहीं ठीक है ।

[इसी समय हाथ में दही का कुलड़ा लिये रेखा बाहर से आती है]

रेखा : (राकेश को अचानक देखकर) छोटे चाचा ।

राकेश : अरे, आ गई बिटिया ।

हीरालाल : (रेखा के सिर पर खून लगा देखकर) यह क्या हुआ ?

रेखा . दही लाने गई थी कि रास्ते में कुत्तो को देखकर डर गई ।

राकेश . दही लाने को किसने कहा था ?

महेश . मैंने ।

हीरालाल . पर, यह लगी कैसे ?

रेखा : डरकर भागना चाहा कि साइकिल से टकरा गई ।

हीरालाल : ज्यादा चोट तो नही लगी ?

रेखा : नही, आप चिंता न करें ।

महेश . दही तो नही गिरा दिया ? (कहकर रेखा के हाथ से कुलड़ा लेता है और अन्दर चला जाता है)

रेखा : छोटे चाचा, आप कब आए ?

राकेश : अभी थोड़ी देर पहले ही । तुझे लेने के लिए आया हूं ।

रेखा : नही'''नही'''मैं बाबा के साथ यही रहूगी । क्यों बाबा ?

हीरालाल : हां, गुड़िया । तू मेरे साथ यही रहना । अब जा, अन्दर जाकर, कोई दवा लगा ले ।

[रेखा अन्दर चली जाती है]

राकेश : कितनी भोली है ।

हीरालाल : तभी तो दु ख को दु ख नही समझ पा रही । चुपचाप झेलती रहती है ।

कमला · (अन्दर से आती हुई) क्या दु ख दिया है हमने, जो झेलती रहती है ? आखिर आप कहना क्या चाहते है ?

[हीरालाल कोई प्रत्युत्तर नही देता]

राकेश : शान्त हो जाइए भाभी । व्यर्थ मे बात बढ़ाने से क्या फायदा ?

महेश . (अन्दर से वापस लौटकर) फिर क्या हुआ ?

कमला : इनसे पूछिए ।

महेश : क्या बात है बड़े पापा ?

राकेश : (बीच ही में) कुछ भी नही ।

कमला : कुछ क्यों नहीं ? (हीरालाल से) मन में जो कुछ है, कह डालिए।

महेश : बोलिए।

हीरालाल : बोलूं ? सुनोगे ? हिम्मत है सुनने की ?

कमला : हां-हां, सुना दीजिए। कुछ बाकी न रहे।

हीरालाल : अरे, क्या बाकी न रहे ! क्यों मेरा मुंह खुलवाते हो ? हमारे साथ जो कुछ हुआ, वो हम ही जानते हैं। मेरी खामोशी का यह मतलब नहीं है कि मैं विक्षिप्त हो गया हूं। आज तक मैं इसलिए चुप रहा कि हमारे खानदान की प्रतिष्ठा, लोगों की कानाफूसी का विषय न बने। कोई उंगली उठाकर यह न कहे कि हीरालाल ने 'बड़े बाप' की मर्यादा को कलंकित कर दिया।

कमला : दूसरे शब्दों में यही कहना चाहते हैं कि छोटे भाई के बेटे ने आपका कोई मान नहीं रखा ?

हीरालाल : नहीं-नहीं, मेरा तो खूब मान रखा, एक घरेलू नौकर की जिन्दगी देकर ! और इस गुड़िया को तो कभी पलकों से नीचे ही नहीं उतारा !

महेश : ऐसे तीखे तीर न चलाइए, बड़े पापा। कुछ तो सफेद बालों की लाज रखिए।

हीरालाल : लाज तो मेरे बेटे, तुझे आनी चाहिए, जो इस मासूम बच्ची को पराई समझकर दुतकारता रहा। अरे, कभी इतना तो सोचा होता, यह कोई पराई नहीं, तेरी भतीजी है, अपनी भतीजी।

महेश : बड़े पापा !

हीरालाल : अरे, अपने स्वार्थ के लिए अपने खून से भी दगा कर बैठा ! झूठ बोलते-बोलते इस चिर-सच्चाई को भी भूल गया कि मैं तेरे बाप का बड़ा भाई हूं।

कमला : पर, झूठ क्या कहा हमने ?

हीरालाल : यह मुझसे क्यों पूछती हो बहू ? अपने-आपसे पूछो।

कमला : क्या पूछें ? कौन-सी हमने आपको रोटी नहीं डाली ?

हीरालाल : अरी बहू ! एक-आधी सूखी रोटी तो लोग गली के कुत्तों को भी डाल देते हैं। हम लोग रोटी के भूखे नहीं, तुम लोगों के प्यार के भूखे थे। जिसके लिए आज तक तरसते रहे।

कमला : साफ ही क्यों नहीं कह देते—हमने आपके लिए कुछ नहीं किया ?

हीरालाल : कुछ क्यों नहीं, बहुत कुछ किया। हमें अपने ही घर में शरण दी, यह क्या कोई कम है ?

महेश : बड़े पापा, अब तक हमने जो कुछ किया, क्या यही उसका श्रेय दे रहे हो ?

कमला : भलाई का तो जमाना ही नहीं रहा।

राकेश : भाभी, एक दफे आप चुप हो जाइए। (हीरालाल से) बड़े पापा, आपका आक्रोश कहीं इस बात को लेकर तो नहीं है कि भाईसाहब घर में टी० वी० नहीं लाए?

हीरालाल : टी० वी० ! क्या मतलब ?

राकेश : ओह ! तो आपने कभी टी० वी० लाने की बात पर जोर नहीं दिया !

हीरालाल : कैसी बातें करता है ? ऐसी चीजों मे मेरा क्या वास्ता ? अरे, मैं तो अपनी यादों के आईने में 'अपनों' की तस्वीरें भी नहीं देख पाता। सारा समय तो भीतर के शब्दों को भीतर ही चबाने मे निकल जाता है।

[कहता हुआ अन्दर चला जाता है]

राकेश : (वस्तुस्थिति को समझकर महेश से) भाईसाहब, बड़े पापा के साथ, आप लोग ऐसा व्यवहार करेंगे—यह तो कभी मैंने सपने में भी नहीं सोचा। मैं पूछता हूं, क्या किया था इन्होंने ? किस बात का बदला लिया आपने ?

कमला : राकेश ! अपने बड़े भाई पर ऐसे झूठे आरोप लगाते तुम्हें शर्म नही आती ?

राकेश : आती, यदि 'झूठ' पर परदा पड़ा रहता। अब सच्चाई सामने आ गई है। फिर भी, मैं यह समझ नही पा रहा हूं, आपने इन्हें कुण्ठाओं की बैसाखियों के सहारे, तिल-तिल, जीवन घसीटने को क्यों बाध्य किया !

[महेश चुप]

राकेश : चुप क्यों हैं ? बताइए न ! आपको तो इनसे कुछ-न-कुछ मिला ही है। इन्हें कुछ देना तो नही पड़ा ? फिर भी आप चाहते हैं कि इनकी मौत किश्तों में हो !

महेश : राकेश !

कमला : क्यों हमें जलील करने पर तुले हुए हो ?

राकेश : यों उबलिए मत ! क्या आप यह चाहती है कि हमारे खून के रिश्ते, स्नेह के बन्धन, सब एक ही झटके में टूटकर बिखर जाएं ?

कमला : अब टूटने में बाकी रहा ही क्या है ?

[कहती हुई गुस्से से भरी अन्दर चली जाती है]

राकेश : नही, हमें इन बन्धनों को टूटने नही देना है। जीने के जहां अलग-अलग ढंग हों, वहा मन की नजदीकियां तभी बनी रह सकती हैं, जब

कुछ अधिक हो। बड़े पापा हमारे साथ जयपुर चलकर रहेंगे तो यह अशान्ति का उठता हुआ तूफान अपने-आप शान्त हो जाएगा।

[हीरालाल अन्दर से वापस लौट आता है]

हीरालाल . नही बेटे, शान्ति के इन दकियानूसी विचारों मे मेरा मन अब उचट गया है। अब तक मैं खानदान की प्रतिष्ठा के झूठे अहंकार मे अपनी उपयोगिता का मूल्यांकन न कर सका।

राकेश : मतलब ?

हीरालाल मतलब यही कि आज मैं जान पाया—भविष्य की निराशा के सोच ने ही मुझे खोखला बनाया है। जबकि महसूस करता हूं, कि इतना दम तो मेरी रगो मे अब भी है कि अपने जीवन को सहज आगे धकेल सकू।

राकेश : यह आप क्या कह रहे हैं ?

महेश शायद यह सोच रहे हैं, अलग रहकर ही जीवन अधिक सुखी हो सकता है।

राकेश · नही-नही। (हीरालाल से) आपकी उम्र अब अकेले रहने की नही है।

हीरालाल · यही सोच तो हमारे सान्ध्य जीवन की त्रासदी है। अरे, मैं पूछता हूं, हमारे महापुरुषों ने क्या एकाकी जीवन की गरिमा को बनाए नही रखा ?

राकेश : लेकिन···?

हीरालाल : ···लेकिन क्या ? मेरे लम्बे अनुभवों ने मुझ इस बारे मे सब कुछ बता दिया और इतना साहस बटोरकर दे दिया कि इस त्रासदी का भली-भाति मुकाबला कर सकूं।

राकेश : किस रूप मे करेंगे यह मुकाबला ?

हीरालाल : इस रूप में कि इस जीर्ण गलियारे की ओर आने वालों को किसी अंधेरे का अहसास न होने दू।

महेश : इससे क्या होगा ?

हीरालाल : आयु की ढलती अवस्था जीने के उत्साह पर चोट नही करेगी। अनन्त के रास्ते मे विश्वास का हल्का प्रकाश भी हो, तो कोई विचलित नही होगा।

राकेश : तो अब आपको क्या किसी के सहारे की आवश्यकता नही पडेगी ?

हीरालाल : नही। फिर, यह गुडिया मेरे साथ है। सच तो यह है, आज मेरे अन्दर के सोए आदमी ने मुझे मेरी सही पहचान करा दी है। अब तो मैं खूंटी से बंधा वो पनीर हू, जो दूध से भी अधिक महंगा है। भले ही उसका

पानी बूंद-बूंद टपककर रिस चुका हो।

राकेश : (गद्गद होकर) बड़े पापा !

महेश : मुझे माफ कर दीजिए बड़े पापा। आप अपना यह निर्णय बदल डालिए।

हीरालाल : नहीं, यह निर्णय तो मुझे बहुत पहले ले लेना चाहिए था। इस विलम्ब के लिए, न जाने, मेरे कितने हमराही, मुझे कोस रहे होंगे।

महेश :
राकेश : ऐसा मत सोचिए, बड़े पापा।

हीरालाल : अरे, भावनाओं मे मत बहो। जीवन के इस नये अध्याय के लिए अब मुझे अकेला छोड़ दो ताकि 'बन्धन' की परिभाषा सदा टूटने से बची रहे। (रेखा को आवाज देता है) गुड़िया !

रेखा : (अन्दर से) आई बाबा ! (प्रवेश करके) कहिए बाबा !

हीरालाल : चल गुड़िया, यहां से चलें—एक नई पगडंडी पर।

रेखा : चलिए।

हीरालाल : ···चल। (रेखा के कन्धे पर हाथ रखकर बाहर जाने को होते हैं कि सभी 'फ्रीज' हो जाते हैं।)

परिवर्त्तन

पार्वती . फिर तो पूछे बिना मैं भी नही रहूंगी। बताइए न'''।

महादेव : '''नही बताता ।

पार्वती : आपको मेरी कसम है ।

महादेव : (हंसता हुआ) अरी पगली, पार्वती के सिवाय महादेव भला और किसकी साधना करेगा ?

पार्वती : ओह ! तो यह पहले क्यों नहीं बताया ! मैं कही गलत समझ बैठती तो !

[महादेव कुछ बोलता नही और धीरे से हंस देता है]

पार्वती : (जैसे विश्वास न हो) आप सच कह रहे हैं न !

महादेव . बिल्कुल। नब्बे पैसे सच।

पार्वती · और बाकी दस पैसे ?

महादेव : वो इन भिनभिनाती मक्खियों के लिए जिन्हें मैं यहां बैठाकर मार रहा हू। (कहता हुआ हंसने लगता है)।

पार्वती . आप तो मजाक पर उतर आए। अच्छा, आप तो यह बताओ, अभी क्या कर रहे हो ?

महादेव : साहबजी का इन्तजार। तू बता'''तू क्या कर रही है ?

पार्वती : मैं तो जब से आई हू, काम में लगी हुई हूं।

महादेव : ऐसा !

पार्वती . आपकी तरह बेकार नही बैठती। तरह-तरह के पकवान बनाए हैं।

महादेव : किसके लिए ?

पार्वती : यह मेमसाहिब जाने।

महादेव : अच्छा, अब तो सारे कामो से निपट गई ?

पार्वती : हा, निपट गई। तभी तो फोन किया है। अब तो बस, घर चलने की तैयारी है। बिटवा अम्मांजी की गोद में मचल रहा होगा।

महादेव : मेरी बीबीजी भी बस, आने वाली है। वे आई नहीं कि मैं भी तुम्हारे साथ निकल पडूंगा।

पार्वती : वे जल्दी नही आई तो ?

महादेव : फिर तो साहबजी के आने तक इन्तजार करना होगा।

पार्वती : मैं आपके उधर ही आती हूं। (कहती हुई फोन रख देती है)।

महादेव : पार्वती'''पार्वती ! ओह, रख गई फोन !

राजन : (बाहर से प्रवेश करते हुए) अरे, किससे बातें कर रहा है, महादेव ?

महादेव : (फोन रखकर) जी'''जी'''मेरी घरवाली का फोन था।

राजन : अच्छा-अच्छा। बीबीजी कहां हैं ?

धीरज : यह कोई बात नहीं हुई। व्यवस्था पति के हाथ में रहे तो पत्नी चाहे किसी भी मस्तार में पली हो, अपनी सीमा को लांघ नहीं करेगी।

राजन : लेकिन मैं कुछ आपसी तालमेल में अधिक विश्वास रखता हूं।

धीरज : विरोध मेरा भी नहीं है। पर, आपसी तालमेल दोनों तरफ से हो तो मजा है।

राजन : हां, तुम्हारा सोचना भी सही है।

[महादेव चाय लेकर आता है]

महादेव : (चाय की ट्रे मेज पर रखता हुआ) बीबीजी आ गई हैं। (कहकर चला जाता है)।

धीरज : (सकपकाता-सा) मैं अब चलता हूं।

राजन : क्यों? यह चाय कौन पिएगा?

धीरज : तुम और तुम्हारी पत्नी।

राजन : बस, रहने दे। यह बता, इतनी जल्दी क्या है?

धीरज : जल्दी है। तुम समझते नहीं। मैंने कई बार देखा है, मेरे यहां होने पर भाभी के स्वभाव में सहजता नहीं रहती।

राजन : मुझसे कुछ छिपा नहीं है। उसका अहम् उस पर हावी हो जाता है।

धीरज : इसीलिए। अभी मैं चलता हूं। फिर मिलूंगा।

[धीरज बाहर जाने को होता है कि रेखा आ जाती है।]

धीरज : नमस्ते भाभी!

रेखा : नमस्ते। अरे, चले किधर?

धीरज : अपने गरीबखाने। यहां आए को काफी देर हो गई। ऑफिस से सीधा यहीं चला आया। अब इजाजत चाहता हूं।

रेखा : नीना कैसी है?

धीरज : ठीक है।

रेखा : उसके तो दर्शन ही दुर्लभ हो रहे हैं। कभी तो उसे भी साथ ले आया करो।

धीरज : क्या करूं? उसे घर के कामों से फुर्सत मिले तब न! बच्चे भी तंग किए रहते हैं। बाहर निकलने का मौका ही नहीं मिलता।

रेखा : कालेज तो जाती होगी?

धीरज : वहां तो जाना ही पड़ता है, नौकरी जो है। खैर, कोशिश करूंगा, कभी उसे भी साथ लाऊं। अच्छा, नमस्ते।

रेखा : नमस्ते।

[धीरज का प्रस्थान]

रेखा : सीमा के लिए पूछा था इनसे ?

राजन : तुम्हारी बहिन के लिए ?

रेखा : हा। ये अपने भाई को राजी कर लेवें तो मै पापाजी को पत्र लिख दू। सीमा के विवाह की उन्हें बहुत चिन्ता है।

राजन : (झूठ बोलते हुए) मैने पूछा था। बोला, नीरज अब बच्चा नही है। शादी के मामले में उसकी अपनी पसन्द है। वो 'हां' करे, तो कोई बात बने।

रेखा : यही तो मुसीबत है। नीरज कहता है, धीरज भैया से पूछो, और ये है कि उस पर डाल रहे है। मेरी तो कुछ भी समझ मे नही आता।

राजन : तो अब करें क्या ?

रेखा : करें क्या···कोई करने वाला चाहिए। क्या नही होता ? तुम्हारे तो फास्ट फ्रेण्ड है।

राजन : है। बचपन से दोनो साथ रहे है।

रेखा : फिर भी तुमसे कुछ नही होता। चाहो तो कुछ जोर देकर भी कह सकते हो।

राजन : मैं कोई जोर देना नही चाहता।

रेखा : न दो। वैसे तो कह सकते हो। यह कौन-सा तुम्हारा कहना नही मानते।

राजन : नही मानता।

रेखा : क्यों ? इनकी कोई नाराजगी है ?

राजन : मैं नही बताता।

रेखा : क्यों नहीं बताते ?

राजन : हां, नाराजगी है। बस।

रेखा : बस क्यो ? यह बताओ, नाराजगी है तो किस बात की ?

राजन : (झुंझलाते हुए) इस बात की···इस बात की···(फिर अचानक कुछ छुपाते हुए) नही बताता।

रेखा : (अधिकारस्वरूप) बताना पड़ेगा।

राजन : तो सुनो। यह मुझसे इसलिए नाराज है कि एक दफे मैंने इसकी बात नही मानी।

रेखा : तुमने इनकी कौन-सी बात नही मानी ? क्या कहा था इन्होने ?

राजन : कुछ नही।

रेखा : छुपाते क्यों हो ?

राजन : इसमें छुपाने की क्या बात है ?

रेखा : तो बतलाते क्यों नहीं ?

राजन : हर बात बतानी जरूरी नहीं है।

रेखा : मैं जानकर रहूंगी।

राजन : देखो रेखा, जिद्द न करो। ये सब बेकार की बातें हैं। मेरा भेजा मत चाटो।

रेखा : क्या ? मैं कोई जानवर हूं जो तुम्हारा भेजा चाटूंगी।

राजन : मुझे नही पता।

रेखा : जानते नहीं मुझे ? मैं एक पुलिस ऑफिसर की बेटी हूं।

राजन : जानता हूं।

रेखा : फिर यह भी जानते हो कि मैं जो सोचती हूं, वो करके दिखाती हूं।

राजन : यह भी जानता हूं।

रेखा : (खीझती हुई) तब मुझसे कोई बात छुपाते क्यों हो ? सच-सच बतलाते क्यो नही ? क्या कहा था इन्होंने ?

[राजन चुप]

रेखा : चुप क्यों हो ?

[राजन फिर भी चुप]

रेखा : बोलते क्यो नही ? (चीखती हुई) क्या कहा था ?

राजन : (अत्यधिक झुंझलाहट के साथ) यह कहा···यह कहा कि मै तुमसे शादी न करू।

रेखा : एक दफे फिर कहना।

राजन : तुमसे शादी न करू। हां !

रेखा : हां ऽऽऽ ! फिर क्यों की शादी ? क्यो लिये फेरे ? (कहती हुई आगे बढ़ती है)।

राजन : जरूरी नही है यह बताना। (कहता हुआ पीछे खिसकता है)।

रेखा : पीछे क्यों खिसकते हो ?

राजन : मेरी मर्जी।

रेखा : ठहरो। (पकड़ने का उपक्रम करती है)

राजन : तुम वही रहो।

रेखा : नही, मैं पता लगाकर रहूंगी।

राजन : मैं कहता हूं, छोड़ो इस बात को।

रेखा : क्यों छोड़ूं ?

राजन : रेखा !

रेखा : साफ-साफ बतलाते क्यों नही ?

राजन : मगर इससे मतलब क्या हल होगा ?

रेखा : कुछ भी हो। मैं बात की गहराई तक पहुंचकर रहूंगी।

राजन : (अकड़ते हुए) फिर, मैं नही बताता।

रेखा : नही बताओगे ?

राजन : नही बताता।

रेखा : देखती हू कैसे नही बताते ?

राजन : मैं कहता हूं, आगे न बढ़ना।

रेखा : बढ़ूंगी।

[राजन कुर्सियों को इधर-उधर खिसकाता हुआ मेज के इर्द-गिर्द बचने की चेष्टा करता है। रेखा उसे पकड़ना चाहती है। अचानक मौका देखकर राजन मेज के नीचे जाकर दुबक जाता है।]

रेखा : (मेज के नीचे झांकती हुई) निकलो बाहर।

राजन : नही निकलता।

रेखा : देखो, चुपचाप मेज के नीचे से निकल आओ।

राजन : बिल्कुल नही।

रेखा : मैं कहती हूं निकल आओ।

राजन : कह दिया न, नही निकलता।

रेखा : तो नही निकलोगे ?

राजन : (शेर बनता हुआ) हां, नही निकलता—नही निकलता—नही निकलता। मुझ पर हुक्म चलाने वाली तुम कौन होती हो ? यह मेरा घर है। मै इस घर का मालिक हू। मेज के ऊपर रहू या नीचे, तुम कहने वाली कौन ? समझी।

रेखा : मैं तो समझ गई। अब तुम्हें समझाना है। (कहती हुई नीचे झुककर राजन की टाई पकड़ लेती है।) अब बोलो।

राजन : रेखा-रेखा ! यह क्या करती हो ? छोड़ो मेरी टाई···छोड़ो न ! (कहता हुआ रेखा से टाई छुड़वाने की कोशिश करता है)

रेखा : शोर न करो। बाहर निकल आओ।

राजन : (बाहर आकर टाई छुड़वाता है) कुछ तो लाज रखो।

रेखा : पुलिस ऑफिसर की बेटी हू। मुझे लाजवन्ती नही बनना।

राजन : मत बनो। बोलो क्या पूछना है तुम्हे ?

रेखा : धीरज ने जब मना कर दिया तो क्यों की शादी मुझसे ?

राजन : सुनोगी ?

रेखा : हां।

राजन : क्योंकि मेरे पिताजी तुम्हारे पापा के अंडर में एक मामूली हैड-क्लर्क थे। इसलिए……।

रेखा : ……मेरे पापा के कहे को वे टाल नही सके?

राजन : हां-हां।

रेखा : पर तुम तो रिफ्यूज कर सकते थे?

राजन : नही किया।

रेखा : क्यों नही किया।

राजन . पिताजी के आदेश की अवहेलना मैं नही कर सकता था।

रेखा : मतलब यह कि मैं पसन्द नही थी तुम्हे?

राजन : यह मैंने नही कहा।

[इसी समय महादेव आता है]

महादेव ' बीवीजी, सक्सेना बाबू की बहूरानी आई है।

रेखा : कौन पूजा?

महादेव : हा जी।

रेखा : कहाँ है?

महादेव . बाहर बगीचे मे।

रेखा : कह दे, मै आती हू।

[महादेव का प्रस्थान]

रेखा ' अब थोड़ा-सा कुछ कह दिया कि कुप्पा-सा मुह फुला लिया।

राजन : तुम्हे इससे क्या?

रेखा : फिर वही बात। पूजा से नही मिलना?

राजन : नही मिलना।

रेखा : पता है, वह मेरी अन्तरंग सहेली है।

राजन : होगी। मुझे नही मिलना।

रेखा : कही बाहर जाना है?

राजन : हा।

रेखा : कहा?

राजन : जहन्नुम मे।

रेखा : गुस्सा उतारने के लिए और कोई जगह नही बची?

राजन : मुझसे बहस मत करो।

रेखा : ठीक है। जाओ। पर ध्यान रहे, आठ से पहले-पहले लौट आना। मैं चलती हूं।

राजन : मैं खाना नही खाऊगा।

रेखा : महादेव को कह दो। (जाती-जाती) और हा, एक बात फिर सुन लो, काम और समय में किसी प्रकार की ढील मुझे बिल्कुल बर्दाश्त नही है।

[रेखा का प्रस्थान]

राजन . मुझे पता है। यह 'ऐंठ' तुम्हे अपने पीहर से विरासत मे मिली है। चाहे तो इसे 'दहेज' कह लो।

मिक्की : (चुपके से अन्दर आकर) अंकल !

राजन : कौन, मिक्की !

मिक्की : क्या बात है अंकल ? आंटी क्या कह रही थी ?

राजन : कुछ नही बेटी।

मिक्की : कुछ क्या नही, बहुत कुछ कह रही थी।

राजन : तुझे कैसे पता ?

मिक्की : मैं इधर अन्दर की तरफ खड़ी-खड़ी सब सुन रही थी।

राजन : अच्छा ! क्या सुना तुमने !

मिक्की : आंटी आपको शशिकला बनकर डांट रही थी।

राजन : शशिकला कौन ?

मिक्की : वो, जो फिल्मो मे आती है।

राजन : (हंसते-हसते) अच्छा-अच्छा ! बेटी, तेरी मम्मी भी तो तेरे पापा को डांटती होगी।

मिक्की : नहो, बिल्कुल नही। मम्मी को तो मैंने कभी तेज बोलते भी नही सुना।

राजन : अच्छा।

मिक्की : अंकल, एक बात बताइए। आंटी आपको इतना डांटती क्यों हैं ?

राजन : गलती करने पर तो डांट खानी ही पड़ती है।

मिक्की : तो आप गलती करते ही क्यो है ?

राजन : अब नही करता। एक दफा जो गलती हो गई"'।

मिक्की : ''''''उसकी डांट आज तक खानी पड़ रही है।

राजन : हा।

मिक्की : एक बात और, यह पूजा आंटी आपके यहा क्यो आती हैं ?

राजन : तुम्हारी इस आंटी को वो सहेली है। मिलने के लिए कभी-कभी आ जाती है।

मिक्की : यह पूजा आंटी तो मुझे बिल्कुल अच्छी नही लगती।

राजन : क्यो बेटी ?

मिक्की : ये अपने-आपको बहुत 'शो' करती हैं। ऊंहूं, देखा नही लाट साहब

की बेटी को।

राजन : न-न, ऐसा नही कहते ।

मिक्की आप नही जानते अंकल। ये सीधे मुह किसी से बात ही नही करती। इसलिए मैं तो इनसे बोलती ही नही।

राजन : अच्छा यह बता, तू कैसे आई।

मिक्की : अररर् यह तो मैं कहना ही भूल गई। पापा ने आपको इसी समय बुलाया है।

राजन . पापा ने बुलाया है !

मिक्की : हां।

राजन . मगर अभी थोड़ी देर पहले ही तो तेरे पापा यहां मुझसे मिलकर गए है।

मिक्की इसका मुझे पता नही। शायद यहा पर कहना भूल गए हो।

राजन : यह नही बताया, काम क्या है।

मिक्की : काम, मैं बताती हू। (**कहकर राजन के कानों में कुछ फुसफुसाती है**)

राजन : अच्छा-अच्छा। फिर तो जरूर चलूगा। (**आवाज देकर**) महादेव।

महादेव : (**अन्दर आते हुए**) जी साहब।

राजन : देख, मैं मिक्की के साथ धीरज के यहा जा रहा हूं। खाना मत बनाना।

महादेव : जी।

राजन : बीबीजी को कह देना, रात को मै जरा देर से आऊं तो···नही, नही, मैं ठीक टाइम पर लौट आऊगा।

महादेव : जी।

राजन : अच्छा, ऐसा कर, उन्हे कुछ भी न बताना। मैं अपने आप आ जाऊगा।

महादेव : जो हुक्म।

राजन : चल मिक्की।

[दोनो का प्रस्थान]

महादेव : (**स्वगत**) वाह रे भगवान ! कैसी अनूठी जोड़ी बनाई है। कहा तो साहब का भोलापन और कहा बीबीजी का तेज तर्राटा···। मेरे पर यदि मेरी घरवाली···।

पार्वती : (**अचानक प्रवेश करती हुई**)······आ गई मैं। कहिए, क्या कह रहे थे ?

महादेव : अरे ! तू तो सचमुच आ गई।

पार्वती : आप याद करो और मैं न आऊ !
महादेव : सच !
पार्वती : और नही तो कोई झूठ ! क्यों याद कर रहे थे मुझे ?
महादेव : मेरे हृदय में हरदम बसी जो रहती हो।
पार्वती : हटो जी। ज्यादा बाते न बनाओ। अब घर चलो।
महादेव : नही। अभी तेरे साथ नहीं चल सकता।
पार्वती : क्यो ? बीबीजी तो आ गई न !
महादेव : पर, साहब अभी बाहर गए है। उनके लौटने पर ही घर आ सकूगा।
पार्वती : तो फिर मैं अकेली जाऊ ?
महादेव : हा। अरे, यह मुह क्यों लटका लिया ?
पार्वती : नही तो। फिर ऐसा करो, मै थोड़ी मिठाई लाई हू।
महादेव : किसने दी है ?
पार्वती : मेरी मेमसाहिब ने।
महादेव : अच्छा।

[पार्वती कटोरदान खोलकर कुछ मिठाई निकालती है कि उधर रेखा बाहर से आकर दरवाजे पर ठिठककर खड़ी हो जाती है और छुपकर महादेव और पार्वती की क्रियाओ को देखने लगती है]

पार्वती : (मिठाई देती हुई) आप देर से आएगे। यह थोडी मिठाई ले लीजिए।
महादेव : नही—नही। अभी जरा भी इच्छा नही है। घर आऊगा तब तेरे साथ बैठकर खाऊगा। अकेले खाने मे मजा नही है।
पार्वती : मगर आप तो देर से आएगे।
महादेव : तो क्या हुआ !
पार्वती : अच्छा, मैं इन्तजार करूंगी।
महादेव : बिटवा की मा, तू मेरा कितना ख्याल रखती है।
पार्वती : वाह जी ! आपका नही तो किसका ख्याल रखूगी ! औरत का धर्म है, पति की सेवा।
महादेव : न···न···न···औरत का धर्म है पति के साथ प्रेम से मिलकर रहना। बच्चों को पालना।
पार्वती : यह सब मुझे नही आता।
महादेव : तेरा इस तरह शर्माना ही तो मुझे दीवाना बनाए रखता है।
पार्वती : हटो जी। (बात को दूसरी ओर मोड़ते हुए) साहब आपके अकेले

ही बाहर जाते है ?

महादेव हा। क्या बात है ?

पार्वती : आपकी बीबीजी···।

महादेव . ······अरे, मेरी नही···।

पार्वती : ······ठीक है, ठीक है। बीबीजी तो बाहर बगीचे में बैठी किसी से बातें कर रही हैं। वो साहब के साथ नही गई ?

महादेव अरे, मेरे साहब तो वैसे कही बाहर नही जाते। अभी कोई बुलाने आ गया तो गए हैं। वो भी थोड़ी देर के लिए।

पार्वती : बीबीजी के साथ तो कभी बाहर जाते होंगे ?

महादेव : नही, कभी नही। जरा धीरे बोल।

पार्वती . क्यों ? क्या बात है ?

महादेव : बस, ऐसे ही। बीबीजी और साहब मे कुछ कम ही पटती है। अभी थोड़ी देर पहले ही दोनों मे खासी नोक-झोक हुई है।

पार्वती : ऐसा ! क्या आपकी बीबीजी का···।

महादेव : ···अरे मेरी नही, साहब की बीबीजी का···।

पार्वती : ···हां-हां···उनका स्वभाव क्या बहुत तीखा है ?

महादेव : तीखा है तभी तो सब कुछ फीका है। पारा उनका हरदम ऊंचा ही चढ़ा रहता है।

पार्वती : क्यो ?

महादेव : पुलिसवालो की बेटी है।

पार्वती : तो क्या हुआ ? दिल तो औरत का है।

महादेव : यही तो रोना है। उनके दिल-विल कुछ नही है। तभी तो साहब के साथ उनके मिलन में वो बात नही है, जो तेरे और मेरे बीच मे है।

पार्वती : ओह ! तभी मैं सोचूं, यहा आगन मे बच्चो की किलकारिया क्यो नही हैं।

महादेव : बस, आ गई न अपनी बात पर। अरे, इससे अधिक तुम सोच ही क्या सकती हो !

पार्वती : रहने दो जी। औरत होते तो मालूम पड़ता। आप क्या जानें। सूनी गोद जीना हराम कर देती है औरत का।

महादेव : यह सब बेकार की बाते है।

पार्वती : आप चाहें कुछ भी समझो। बीबीजी को चाहिए कि एक बार प्यार के खातिर पति की मनुहार करके तो देखे। फूलों की तरह दिल के सारे अरमान खिल न जाए तो मुझे कहे।

महादेव : पर उन्हे समझाए कौन ?

[दरवाजे की ओट मे खडी रेखा के होठो पर मुस्कान थिरक उठती है]

पार्वती : कभी मौका मिला तो मैं कहूंगी उनसे। कहूंगी, पति को एक बार साजन बनाकर तो देखो, सजनी के पैरो में घुंघरू बज उठेंगे।

महादेव : सवाल तो बिल्ली के गले मे घंटी बाधने का है।

पार्वती : कहा न, यह काम कभी मै ही करूंगी।

[रेखा अन्दर आ जाती है]

रेखा : यह कौन है महादेव ?

महादेव : जी-जी···यह पार्वती है। मेरी घरवाली।

पार्वती : नमस्ते जी।

रेखा : नमस्ते। (महादेव से) अच्छा तो यह है तेरी पार्वती !

महादेव : जी, बीबीजी।

रेखा : पहले तो तू अकेला ही रहता था ?

महादेव : जी, किराये का मकान नही मिला, जब तक। अब तो हम दोनो साथ रहते है।

रेखा : और कौन-कौन है ?

महादेव : एक हमारा नन्हा बिटवा और एक मेरी अम्माजी।

रेखा : बहुत अच्छा। देख, मैं जरा पूजा के यहा जा रही हूं। साहब आएं तब तक तू यही रहना।

महादेव : जी, बीबीजी।

रेखा : कही पार्वती के प्रेम मे महादेव···।

पार्वती : ···न-न, बीबीजी मुझे तो घर जाकर अपने बिटवा को संभालना है।

रेखा : यह तो है। अच्छा मैं चलती हूं।

[रेखा का प्रस्थान]

महादेव : देख लिया मेरी बीबीजी को।

पार्वती : आपकी नही, साहब की। देख ली।

महादेव : अभी तो कुछ बदली-बदली-सी नजर आ रही है।

पार्वती : बस-बस। अब और झूठ न बोलिए। बेमतलब ही बिचारी पर व्यग्य कस रहे थे। यह तो बहुत अच्छी हैं। मैं चली।

महादेव : अरे, बैठ तो सही।

पार्वती : बिल्कुल नही। ज्यादा जिद्द करेंगे तो मैं भी 'बीबीजी' बनते देर नही लगाऊंगी। फिर छीकते फिरेंगे।

महादेव · (मजाक के मूड में) ऐसा क्या कहो जी ?
पार्वती . यही बैठे रहो जी।

[पार्वती फुर्ती से कटोरदान उठाकर बाहर चली जाती है]

महादेव (स्वगत) चली गई। मेरे बिटवा की मा चली गई।

[इसी समय टेलीफोन की घंटी बजती है]

महादेव · (फोन उठाकर) हेलो···मैं महादेव बोल रहा हूं···आप कौन हैं जी···?
राजन . (फ्लैशबैक में फोन पर) अरे, मैं हू···।
महादेव : यह तो मैं भी समझ रहा हूं···पर मेरे साहब घर पर नही है···।
राजन : अरे मूर्ख···।
महादेव : ···देखिए जनाब···मुझे मूर्ख-वूर्ख कहने की जरूरत नही है···इस मामले मे मैं बहुत बुरा आदमी हू···अट-सट सुनने का आदी नही हूं···।
राजन : ···अरे तू अपनी ही कहेगा या मेरी भी सुनेगा···?
महादेव : ···आपकी बहुत सुन चुका···साफ-साफ कहिए ··आप क्या चाहते है···?
राजन : तेरा सिर···।
महादेव : ···मुह सभालकर बोलिए जनाब···मेरा नाम महादेव है···मेरा बाप किसी जमाने में पहलवानी करता था···सो मैं किसी से डरने वाला नही हू···हा···।
राजन : अरे, पहलवान के बच्चे···क्या चपर-चपर कर रहा है···अरे, मैं तेरा साहब ही तो बोल रहा हू···।
महादेव : ···क्या···?
राजन : ···मै हू···राजन···!
महादेव···जी···जी···गलती हुई साहेब···अब तो जान गया···जान गया, हुजूर, जान गया···माफ करना साहेब···।
राजन : ···अरे, अब ज्यादा री-री मत कर। यह बता, बीबीजी कहा है···?
महादेव : ···वो तो साहेब, पूजा बहूरानी के यहा गई है···।
राजन : ···ठीक है···मैं वही आ रहा हू···।

[दोनो अपने-अपने फोन रख देते हैं। फ्लैशबैक खत्म।]

महादेव : (स्वगत) अजीब बात है। न जाने मेरे इन कानो को क्या हो गया। लगता है इसमे कोई कीड़ा घुस गया। स्साला ठीक तरह से सुनाई

ही नही देता। आज तो हद ही हो गई। साहब की आवाज ही नही पहचान सका।

[टेलीफोन की घंटी फिर बजती है]

महादेव : अब फिर कौन है ! (फोन उठाकर) हैलो···कौन···?

मिक्की : (फ्लैशबैक में फोन पर) मैं मिक्की बोल रही हू दादा···!

महादेव : ओह ! मिक्की···बोलो बिटिया···।

मिक्की : ···आटी कहा हैं ··?

महादेव : ·· वो तो अपनी एक सहेली के यहा गई है···।

मिक्की : ···वहा का फोन नम्बर मालूम है···?

महादेव : ···फोन नम्बर···वहा का फोन नम्बर है·· चार·· तीन···तीन सात···।

मिक्की : ···बस···।

महादेव : ···नही···नही···एक पाच और है···।

मिक्की : ·· यानि कि चार···तीन···तीन···सात···पाच···।

महादेव : ···हां···यही···क्या बात है बिटिया···!

मिक्की : ···मैं आटी से कुछ पूछना चाहती हू···!

महादेव : ···क्या पूछोगी···?

मिक्की : ···उनसे पूछूंगी·· क्या राजन अकल को हमारे यहा खाना खाने के लिए उन्होने मना किया हुआ है···?

महादेव : ·· तो क्या अंकल ने यहा खाना नही खाया···?

मिक्की : ···नही दादा···बिना खाए ही यहा से चल दिए···।

महादेव : ···अच्छा···।

मिक्की : ···हां दादा · ।

महादेव : ···आज उनका मूड कुछ ठीक नही है···।

मिक्की : ·· तभी वे कुछ उखड़े-उखड़े दिखाई दे रहे है···।

महादेव : ···मुझे भी ऐसा ही लगा बिटिया···।

मिक्की : ···दादा···यह सब हमारी आटी की मेहरबानी है···।

महादेव : ···वो कैसे···?

मिक्की : ···देखा नही आपने···आज किस तरह मुह फैलाए हुए थी···।

महादेव : ···नही बिटिया···ऐसा नही कहते···। तुम अभी छोटी हो···।

मिक्की : (नाक सिकोड़कर) तो बड़ों को भी कुछ ख्याल रखना चाहिए··· हरदम यो इतराना नही चाहिए···हुं···। (कहकर फोन रख देती है। फ्लैशबैक खत्म)

महादेव : (फोन रखकर स्वगत) मिक्की बिटिया भी सब जानती है। वाकई

बीवीजी का नाक चढ़ाए रखना बड़ों को क्या, बच्चों को भी नहीं सुहाता। अरे, साहब ने वहां कुछ नहीं लिया तो इसका मतलब है मुझे तो यहां कुछ न कुछ बनाकर रखना चाहिए।

राजन : (अचानक बाहर से आते हुए) मेरे खाने की चिन्ता मत कर।

महादेव : (हड़बड़ाकर) आ गए साहब। अभी फोन पर मिक्की बिटिया ने बताया कि आपने वहां कुछ नहीं लिया।

राजन : हां, खाने की जरा भी इच्छा नहीं है।

महादेव : कहिए तो एक-दो पराठा बना लाऊं ?

राजन : नहीं। तुम अब घर जाओ। तुम्हें देर हो रही होगी।

महादेव : जी (कहकर बाहर जाने लगता है)

राजन : (कुछ सोचकर) जरा ठहरना। एक काम याद आ गया। सुबह को बीवीजी ने अपना वो हार लाने को कहा था जो मैंने एक जगह ठीक करने को दे रखा है। मैं तो भूल ही गया।

महादेव : कहो तो मैं जाकर ले आऊं ?

राजन : नहीं-नहीं। तुम्हें उसका नहीं पता। मुझे ही लाना होगा। कल उसे वही हार पहनकर अपनी एक सहेली की बर्थ डे पार्टी में जाना है।

महादेव : तो साहब सुबह ले आते।

राजन : (जाने का उपक्रम करते हुए) नहीं, अभी लाना जरूरी है। वरना फिर गुस्सा करेगी। फिर, कहीं दूर से तो लाना नहीं। यह पास ही में दूकान है। पांच मिनट भी मुश्किल से लगेंगे। अभी ले आता हूं।

महादेव : ठीक है साहब। आठ तक जरूर आ जाइए।

राजन : हां-हां। इसका तो मुझे वैसे भी ध्यान रहेगा। (जाते-जाते) पर सुन, कल को मैं दो-चार मिनट लेट हो जाऊं और वह पहले आ जाए तो तुम एक काम करना। (सोफे की ओर संकेत करते हुए) यहां चद्दर ओढ़कर सो जाना।

महादेव : लेकिन साहब।

राजन : अरे डरता काहे को है ? पहली बात तो यह कि मैं किसी भी हालत में देर नहीं करूंगा। दूसरी बात, वो भी जल्दी से नहीं आने वाली और मान लो, कहीं खुदानाखास्ता आ भी जाए तो डरने की कोई बात नहीं है। वो आते ही सीधी अपने कमरे में जाएगी।

महादेव : पर साहब, यदि वे इधर आ गईं तो ?

राजन : अरे, ऐसे मेरे कहां भाग्य ! इस बारे में तुम निश्चिन्त रहो। वैसे भी

आज वो रीस मे भरी हुई है। इधर की तरफ आंख उठाकर भी नही देखेगी।

महादेव : (भयभीत-सा होता हुआ) और यदि सचमुच यहां चली आई तो ?

राजन : तो क्या, मुझे सोया हुआ जानकर एक मिनट के लिए भी यहा नही रुकेगी। इसलिए डरने जैसी तो कोई बात ही नही है।

महादेव : तो ठीक है साहब।

राजन : वैसे, मैं जल्दी ही लौट आऊंगा।

[राजन का प्रस्थान]

महादेव : (स्वगत) हे बजरंगबली ! अब तेरा ही आसरा है। मुझे शक्ति देना।

[कहकर महादेव इधर-उधर टहलता है। अन्दर से एक चद्दर लाकर सोफे पर रखता है। फिर हनुमानचालीसा का पाठ करने लगता है कि बाहर से किसी की आहट सुनकर चौंकता है]

महादेव : दिखता है, साहब लौट आए। अच्छा हुआ, जल्दी आ गए। मेरी तो डर के मारे सास ही बैठ रही थी।

[उठकर बाहर की ओर झांकता है फिर थर्राता हुआ फुर्ती से आकर सोफे पर लेटने की चेष्टा करता है]

महादेव : मर गया। मैं तो वाकई मर गया। बीबीजी आ गई। हे बजरंगबली, रक्षा करना। आज खैर नही है।

[कहकर शीघ्रता से चद्दर ओढ़कर सो जाता है]

रेखा : (अन्दर प्रवेश करती हुई) ओह ! आकर सो भी गए। (स्वगत) सच, आज मै कुछ ज्यादा ही बोल गई। मुझे सयम रखना चाहिए था। क्या करू ? कई बार सोचा, मुझे अपने को बदलना चाहिए। पर घर का प्रभाव सहज ही मे नही जाता। सुन रहे है न आप ?

[महादेव यह सब सुनकर भी निर्जीव-सा पड़ा रहता है। उधर बाहर से राजन तेजी से आता है कि रेखा को इस तरह अपने उद्गार व्यक्त करते हुए देखकर एक कोने से ठिठककर रह जाता है।]

रेखा : नीद तो अभी क्या आई होगी। नाराज जो हो मुझसे। नाराजगी स्वाभाविक है। मैं समझती हू, आज मुझे महसूस हुआ कि जीवन मे मधुरता कहा है। अब तक मैं केवल अपने अहंकार मे डूबी रही

जो मेरी बहुत बड़ी नादानी थी। इसके लिए मैं अब कितना ही पश्चात्ताप करूं, कम है। बीता हुआ कल, वापस नहीं आता।

[महादेव का चद्दर के अन्दर पैर हिलता है]

रेखा : एक बात बताऊं। आज मैंने महादेव की पत्नी पार्वती को अपने पति के आगे कुछ इस तरह प्यार उडेलते हुए देखा कि मेरी आंखें फटी-सी रह गई। एकाएक विश्वास ही नहीं हुआ कि मैं जो कुछ देख रही हूं वो कोई हकीकत है। सच, मैंने ऐसे प्यार की कभी कल्पना ही नहीं की। अब आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि आपकी रेखा आज से एकदम बदल गई है। हां हां, सच कहती हूं। आप जरा देखिए तो सही। क्या? आप अभी तक नाराज हैं? लो मैं सौगन्ध खाकर कहती हूं, मुझे अपने किए हुए पर बहुत पछतावा है। अब तो उठ जाइए। क्यों मुझे शर्मिन्दा कर रहे हैं?

[महादेव चद्दर उठाए जाने के डर से थर-थर कांपने लगता है]

: (खुश होती हुई) लगता है, अब आपने मुझे माफ कर दिया है। इसीलिए अन्दर-अन्दर मुस्करा रहे हैं। यही बात है न! तो अब उठ भी जाइए। उठिए न! देखिए एक दफे फिर कहती हूं, अब ज्यादा हठ मत कीजिए। उठ जाइए। नहीं! तो यह लीजिए।

[कहकर तपाक से चद्दर खींचती है। राजन की जगह महादेव को देखकर चीखने को होती है कि एकाएक राजन को जोर से हंसते हुए देखकर हक्कबक्की-सी रह जाती है। इधर महादेव की सिट्टीपिट्टी गुम। रेखा कभी महादेव को देखती है तो कभी राजन को। फिर जब वास्तविकता समझ में आती है तो चेहरे पर शर्म की लाली छा जाती है, इसी समय सारे पात्र स्थिर होकर रह जाते हैं।]

नया नाटक

पात्र-परिचय

लाला भजनलाल : एक कंजूस सेठ
भागवती : लाला की पत्नी
शेखर : लाला का इकलौता पुत्र
घनश्यामदास : शेखर का भावी ससुर
राधेश्याम : घनश्यामदास का रिश्तेदार
मुनीम : लाला का मुनीम

'नया नाटक' की पहली प्रस्तुति रेलवे क्लब, बीकानेर की ओर से 14 अप्रैल, 1988 को दी गई, जो अत्यधिक सफल रही।

दृश्य : एक

[सुबह का समय। लाला भजनलाल के घर की बैठक। लाला का बेटा शेखर टेलीफोन पर किसी से बात कर रहा है और बीच-बीच मे चाय का कप भी होंठो से लगाता जा रहा है। पास ही मे भागवंती बिस्कुट की प्लेट लिये खडी है।]

भागवती : एकाध बिस्कुट तो ले ले बेटा।

शेखर : (हाथ के इशारे से मना करता हुआ, फोन पर) इस समय तुम्हे हिम्मत से काम लेना है सीमा। यह अच्छा किया तुमने, मुझे फोन कर दिया···लेकिन यह घड़ी धीरज खोने की नही है···हां-हा··· मैं अभी आता हू···। (फोन रखता हुआ) मा, मैं उनके यहां जरा हो आऊं ?

भागवती : जरूर जा बेटे। न जाने, उन लोगो पर क्या बीत रही होगी ?

शेखर : पिताजी को इस बारे में कुछ मत बताना।

भागवंती : नहीं रे। उन्हे बताकर काटो पर रखते किसी के पैरों से जूती उतरवानी है ?

शेखर : ठीक कहती हो मा। माया के मोह मे अंधे होकर ये किसी को भी लात मार सकते है।

भागवंती : मैं जानती हूं बेटा। इनकी लालची आदते देख-देखकर मेरी छाती छलनी हो चुकी।

शेखर : सो तो है। इसीलिए सोचता हूं, इस घटना की जानकारी मिलते ही कही इनकी आदत कोई नया गुल और न खिला दे।

भागवंती : तू चिन्ता न कर। इनसे मैं कोई बात ही नही करूंगी। तू जल्दी लौटना। जब तक वापस आकर पूरी खबर नही देगा, समझ ले, मुझे चैन नहीं है।

शेखर : मैं जल्दी ही लौट आऊंगा। (जाते-जाते) मेरे बारे मे पूछें तो कह देना—यही कही गया है।

भागवती : कह दूगी। तू जा।

[शेखर बाहर चला जाता है। भागवती कप-प्लेट उठाकर

अन्दर जाने को होती है कि 'हरिओम-हरिओम' कहता लाला भजनलाल प्रवेश करता है।]

लाला : चाय बन गई।

भागवंती : लेकर आती हूं।

लाला : जल्दी करना।

भागवती : क्यों, कहीं भागे जा रहे हो ?

लाला : क्या मतलब ?

भागवती : मतलब-वतलब कुछ नहीं। दो मिनट भगवान का नाम लो, मैं चाय बनाकर लाती हूं।

लाला : तो यह कहो न, चाय अभी बनी नहीं।

भागवती : हां, यही समझ लो।

[कहती हुई भागवंती अन्दर चली जाती है। लाला अखबार टटोलता है। फिर मेज के नीचे से अखबार निकालकर 'हरिओम-हरिओम' का जाप करने बैठ जाता है।]

लाला : (स्वगत) हे नीली छतरी वाले ! आज तो भावों में कुछ ऐसा उछाला देना कि बात बन जाये। दो दिन से ऐसी मंदी चल रही है कि हाथ पर हाथ दिए बैठा हूं। हरिओम् ! हरिओम् !

[अखबार उठाकर पढता है)

: (पढ़कर अचानक चौंकता हुआ) अरे, शेखर की मां, सुनती हो !

भागवती : (भीतर से) बहरी नहीं हूं।

लाला : तो यह क्यों नहीं कह देती कि सुन रही हूं।

भागवती : (प्रवेश करती हुई) कानों में ठेठी नहीं है मेरे। मुझे सब सुनाई देता है। पर आप है कि अपनी आदत से बाज नहीं आते।

लाला : क्या मतलब ?

भागवती : कितनी बार कहा है—यह घर है। कोई आपकी आढ़त की दुकान नहीं, जो जोर-जोर से बोले जा रहे हो।

लाला : चालू हो गया न तुम्हारा बड़बड़ाना।

भागवंती : बड़बड़ाना मुझे नहीं, आपको आता है। अब कुछ कहोगे भी या नहीं ?

लाला : कोई सुने तो कहूं।

भागवंती : मेरे सिवाय और किसके भाग्य फूटे है जो आपकी सुनेगा। दुनिया में एक मैं ही बची थी, जिसे अनचाही सुनने के लिए भगवान ने यहां भेज दिया।

लाला : और भी कुछ कहना है ?

भागवती : कहने को तो बहुत कुछ है, पर मरे इस काम से फुर्सत मिले तब न ! सुबह से मर-खप रही हूं। पहले आपके लिए गर्म पानी किया। नहा-धोकर आए तो पूजा का सामान रखा।

लाला : और ?

भागवंती : अभी नाश्ता तैयार किया है और अब चाय बना रही हू।

लाला : तो यह सब सुना किसे रही हो ? या फिर चुप नही रहा जाता ?

भागवंती : देखो जी, मेरे पर गुस्सा होने की जरूरत नही है। आपको जो कुछ सुनाना है, सुना दीजिए।

लाला : सुनाना क्या है ? (अखबार दिखलाता हुआ) यह देख ! तुम्हारी तरह यह खबर भी आज सुबह-सुबह मेरी किस्मत पर हथौड़े मार रही है। पढ़ो इसे।

भागवती : मैं कौन-सी पढ़ी-लिखी हू। पढ़कर खुद ही सुना दीजिए।

लाला : अनपढ़ को पढ़कर सुनाना भी एक मुसीबत है।

भागवती : तो कोई पढ़ी-लिखी ले आते। मुझे क्या ? मत सुनाइए।

लाला : तुम तो चाहती यही हो कि मै चुपचाप बैठा रहूं।

भागवती . सुनाना है तो सुना दीजिए। मरे इस अखबार ने फिर क्या लिख दिया !

लाला : सुनोगी तो पैरो तले से धरती खिसक जाएगी।

भागवती : ऐसा ! क्या लिखा है ?

लाला : लिखा है—बाबू घनश्यामदास के यहा चोरी। आधी रात मे सेंध लगाकर चोर सारा माल चुरा ले गए। पुलिस चोरों की तलाश में।

भागवंती : यह तो सचमुच बहुत बुरी खबर है।

लाला : और फिर इतनी देर से चिल्ला ही क्यो रहा था। उनके यहा चोरी हो जाने का मतलब है—शादी मे दिया जाने वाला सारा सामान चोरी चला गया। यानि कि अब वहा ठन-ठन गोपाल !

भागवंती : तो क्या हुआ ? दहेज के बिना क्या शादी नही होती।

लाला : तुम्हारा दिमाग तो गया है घास चरने। अरे पगली, शेखर के लिए क्या कोई दूसरी लड़की नही देखी जा सकती !

भागवंती : बिलकुल नही। ऐसी स्थिति मे क्या उनसे मुंह मोड़ लेना अच्छा लगता है ? नही, मैं यह रिश्ता किसी भी हालत मे नहीं तोड़ूंगी।

लाला : तो उस कंगाल के घर से अब मिलेगा क्या ?

भागवती : एक सुन्दर-सी बहू। जो पढ़ी-लिखी और समझदार है। मुझे और कुछ नही चाहिए।

लाला : लेकिन, मुझे ऐसी बहू नही चाहिए जो खाली हाथ मेरे घर आए।

भागवंती : खाली हाथ कहां होंगे ! उसके दोनों हाथों में मेहदी रची होगी।
लाला : यह नही चलेगा । शेखर मेरा इकलौता बेटा है। उसकी शादी पर लेन-देन की कोई कजूसी मुझे बर्दाश्त नही होगी ।
भागवंती . बेटा वो मेरा भी है । इस घर में बहू वही आएगी, जो मेरे बेटे को पसन्द होगी और घनश्यामदास की यह लड़की उसे पसन्द है।
लाला : तो सुन ले—मेरी मर्जी के खिलाफ यह शादी हर्गिज नही होगी।
भागवंती : आप और मैं होते कौन है, शादी रोकने वाले ?
लाला : मैं उसका बाप हूं ।
भागवंती : मैं उसकी मा हूं ।
लाला : देखो भागवंती, मेरे रास्ते मे अपनी टेढ़ी टाग मत अड़ाया करो। तुम अच्छी तरह जानती हो, मेरा स्वभाव बहुत तेज है।
भागवंती : तो कम मैं भी नही हूं। यह मत समझिए कि मैं आपकी इन धमकियो से डर जाऊगी ।
लाला : धमकी तो तुमने मेरी कभी देखी नही है। दहाड़ मारू तो पड़ोसियो के कलेजे हिल जाएं। क्या समझी ?
भागवंती : इतनी ही शक्ति है, इतना ही रौब है तो पुलिस को क्यो नही दिखला आओ !
लाला : उसे क्यो ?
भागवती : पुलिस वाले जान सके कि बाबू घनश्यामदासजी के पीछे आप जैसे महारथियो के मोटे हाथ है ।
लाला : इससे क्या होगा ?
भागवंती : पुलिस चोर का पता लगाने में देर नही करेगी । उनको तुरन्त अपना माल मिल जायेगा ।
लाला : यह काम मेरा नही है।
भागवंती : अजी इतने निष्ठुर न बनो। कम-से-कम उनके यहा जाकर कुछ खोज-खबर तो ले सकते हो ? सकट की इस घडी मे क्या आपका कोई फर्ज नही बनता ?
लाला : यह मुझे मत सिखाओ। मेरी इज्जत क्या अब उस कंगाल के घर तक जाने की रह गई ! नही, सहायता की जरूरत उसे है तो वे यहा आए। मै वहा नही जाऊगा।
भागवंती : आपका मतलब है, वो यहा आकर आपके आगे हाथ जोडे और गिड़गिड़ाकर कहे—"लालाजी हमारे ऊपर विपदाओ का अचानक पहाड़ टूट पड़ा। आप हमारी मदद कीजिए।"
लाला : और नही तो !

भागवती . अजी, कुछ तो ख्याल करो। रिश्ते-नाते केवल दौलत के तराजू से ही नही तोले जाते।

लाला : बस-बस ! अब तुम चुप रहो। वरना तुम्हारी कैंची-सी जीभ कुछ और ही कतरने लगेगी।

[शेखर का प्रवेश]

शेखर : पिताजी, बाबू घनश्यामदासजी आए है।

लाला : (एकदम हड़बड़ाकर) घनश्यामदासजी ! कहा है ?

शेखर : बाहर है, जाकर भेजता हू।

[शेखर का प्रस्थान]

भागवंती : उनके साथ समधी जैसी बात करना।

लाला : यह क्या मैं नही समझता ?

भागवती : यही तो रोना है। इतना समझते तो अब तक यह नकली रामायण नही होती।

लाला : ठीक है—ठीक है। अभी तुम अन्दर जाओ।

भागवंती : मुझे तो वैसे भी यहा नही रुकना। जाती हूं।

[भागवती का प्रस्थान]

लाला : (स्वगत) जाइए। वरना तुम्हारी जबान मेरा सारा काम बिगाड़ देगी। हरिओम ! हरिओम !

[घनश्यामदास का प्रवेश]

घनश्याम० : नमस्ते लालाजी।

लाला : नमस्ते, नमस्ते। आइए बाबू घनश्यामदासजी। पधारिए। मै तो अभी आपके उधर ही आने की सोच रहा था। यह सब हुआ कैसे ? बैठिए न !

घनश्याम० : (बैठता हुआ) क्या बताएं ? बुरे दिन पूछकर नही आते। रात में सब जने आगन मे सो रहे थे। बड़े वाले स्टोर में, पिछवाड़े से, कब सेंध लगी, पता ही नही चला। सब पर हाथ साफ कर गए।

लाला : कुछ भी नही बचा ?

घनश्याम० : खाली बक्सों के सिवाय कुछ भी तो नही छोड़ा।

लाला : यह तो बहुत बुरा हुआ। अखबार मे न्यूज पढ़ते ही मेरी बुद्धि तो एकदम चकरा गई। शादी मे अब दस दिन ही मुश्किल से बचे हैं कि यह बेमौसम का तूफान आ गया।

घनश्याम० : तूफान फिर कैसा ! उखाड़कर रख दिया हम सबको।

लाला : अब एकाएक सभलना भी कठिन है। (शेखर को आवाज देता है) शेखर, जरा अपनी मां को कहना, चाय बनाए।

शेखर . (भीतर से) कहता हूं।

घनश्याम० : चाय-वाय का कष्ट न करें। अभी बिल्कुल इच्छा नहीं है। मना कर दीजिए।

लाला . (आवाज देता हुआ) अरे, रहने दे। हम यों ही बैठे कुछ आगे की सोचते हैं।

शेखर · (भीतर से) अच्छा, जी।

घनश्याम० · मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा, न जाने, आगे क्या होगा? बड़ी भारी चिन्ता हो रही है।

लाला : चिन्ता तो होती ही है। शादी के लिए क्या कुछ इकट्ठा नहीं किया। सब चला गया।

घनश्याम० फिर ऐन वक्त पर।

लाला . अच्छा, यह बताओ—पुलिस से कुछ उम्मीद है कि वह चोरों का जल्दी पता लगा लेगी।

घनश्याम० : अभी तो क्या कहा जा सकता है।

लाला : (सोचने की मुद्रा में) हूं···! बैंक में कुछ जमाजत्था होगा?

घनश्याम० : था। अब तो उसमें 'न' के बराबर है। अभी पिछले दिनों ही गहने-कपड़ों के लिए अधिकतर निकलवा लिया था।

लाला . अब कितना कुछ बाकी है?

घनश्याम० . बस, यही कोई आठ-दस हजार रहे होंगे।

लाला : (झुंझलाहट के साथ) इतने से क्या होगा? (फिर कुछ सोचकर) किसी से कुछ लेनदारी?

घनश्याम० : कोई नहीं है।

लाला : (हिसाब लगाता हुआ) शादी में न करते-करते भी लाख से ऊपर तो बैठ ही जाता है। फिर हमारी बिरादरी भी तो छोटी नहीं है। अपने बराबर के लोगों को मुंह भी दिखलाना है हमको।

घनश्याम० : लालाजी, मैं आपकी बात समझता हूं। आपकी इज्जत ही, हमारी इज्जत है।

लाला : यही तो दिक्कत है।

घनश्याम० : कम-से-कम कितने में यह काम निपट सकेगा?

लाला : अजी, कम-से-कम करें तो भी साठ-सत्तर हजार के बिना तो हमारी बिरादरी वाले बहू की डोली भी नहीं उठने दें। फिर, शेखर के ननिहाल वाले भी कम नहीं हैं। उनका भी ख्याल रखना जरूरी है।

घनश्याम० : लालाजी, अभी तो किसी-न-किसी तरह विवाह का कार्य सम्पन्न हो

जाने दे। बाद में, जैसे-तैसे होगा, मैं सारी देनदारी चुका दूंगा।

लाला . बाद में कौन-सी हुंडी आ जाएगी।

घनश्याम० : हुडी तो नहीं, मैं कहीं-न-कहीं से कोई इन्तजाम कर दूंगा।

लाला वही तो पूछ रहा हूं—फिर कैसे इन्तजाम हो जाएगा ?

घनश्याम० कहीं से उधार ले लूगा। और कुछ न हुआ तो अपना मकान गिरवी रख दूगा।

लाला मकान ! अरे हा, मैं तो भूल ही गया। गाधीनगर में आपके पास तो अच्छा-खासा मकान है। बल्कि मकान क्या, वो तो पूरी कोठी है, कोठी।

घनश्याम० : जो कुछ है, मेरे पास तो अब केवल यह पूजी बची है।

लाला . यह क्या कोई कम है ? सात-आठ लाख से अधिक की ही होगी। मैंने तो देख रखी है वो कोठी। अभी शायद किसी सरकारी विभाग को किराये पर दे रखी है !

घनश्याम० : जी। पर, लालाजी, समस्या तो शादी होने तक की है। तब तक के लिए क्या उपाय किया जाए ?

लाला हु···! उपाय तो अब कुछ-न-कुछ निकालना ही पड़ेगा।

घनश्याम० : मै तो बहुत परेशान हू।

लाला . परेशान हों आपके दुश्मन। आप तो ऐसा करे, दोपहर को मेरी दूकान पर पधारिए। वहां बैठकर इस बारे मे कोई-न-कोई हल निकालेगे। तब तक मैं भी कुछ सोचता हू, आप भी कुछ सोचिए।

घनश्याम० : हा, यही ठीक रहेगा। अब चलता हू। नमस्ते।

लाला : नमस्ते। दोपहर को आना भूलिएगा नही।

घनश्याम० : जी। (प्रस्थान)

[लाला भजनलाल के चेहरे पर एक विलक्षण मुस्कराहट आकर फैल जाती है]

दृश्य : दो

[लाला भजनलाल का वही मकान। दिन का समय। शेखर परेशान-सा इधर से उधर टहल रहा है।)

शेखर : (स्वतः ही) मुनीमजी का नाटक कहीं बीच ही मे ड्रॉप न हो जाए। मुझे तो बहुत डर लग रहा है।

मुनीम : (प्रवेश करते हुए) अजी, डरें आपके दुश्मन। आप तो शेखर बाबू बेफिक्र रहिए।

शेखर : ओह ! आ गए मुनीमजी !

मुनीम : क्यों, नहीं आना था मुझ ?

शेखर : यह बात नही है। मेरा मतलब···।

मुनीम : ···मैं समझता हूं। तुम उत्सुक हो मेरे नाटक के बारे में जानने को।

शेखर : जी। पिताजी अभी दूकान की तरफ गए कि मैंने सोचा आ जाते तो···।

मुनीम : ···आता कैसे नहीं ? लालाजी के यहा से जाने-भर की देर थी।

शेखर : अच्छा हुआ, आप जल्दी आ गए।

मुनीम : लेकिन आप इतने परेशान क्यों है ?

शेखर : (झिझकते हुए) नही तो। हा, मा जरूर परेशान है कि यह सब कैसे होगा ?

मुनीम : यह मुझ पर छोड़िए। मैंने जीवन को हमेशा नाटक समझकर ही जिया है। हा, इस नाटक मे घनश्यामदासजी जरा पर्दे के आगे आने पर हिचक रहे थे, पर अब किसी तरह बात बन गई।

शेखर : हिचकना तो स्वाभाविक था। उन्होंने यह कब सोचा था भला कि एक दिन उन्हें इस तरह अभिनय भी करना पड़ेगा।

मुनीम : ऐसी बात नही है। मैंने उन्हें बार-बार समझाया, आपको बोलना नहीं है, केवल मेक-अप करके चौखटा बदलना है। पर, इसके लिए भी उनकी हिम्मत नही हो रही थी।

शेखर : सीधे आदमी के लिए यही तो मुश्किल है। चलो, आखिर मान तो गए।

मुनीम : नहीं मानते तो यह नाटक शुरू ही नही कर पाते।

शेखर : यह भी एक सयोग की बात है कि पिताजी ने इससे पहले स्वामीजी को कभी देखा नही। बस, वे इतना ही जानते हैं कि कोई स्वामीजी है जो रिश्ते तय करवाते है।

मुनीम : इसके अलावा एक मजे की बात और, लालाजी राधेश्यामजी को भी नही पहचानते।

शेखर : कभी देखा हो तब न ! उन्हे तो यह भी नही पता, घनश्यामदासजी के कोई फुफेरा भाई भी है।

मुनीम : इसलिए हमारा नाटक कही उखड़ेगा नही।

[राधेश्याम का प्रवेश]

राधेश्याम : उखड़ेगा कैसे ? मैं भाई साहब के साथ जो रहूंगा। उन्हें अधिक

बोलने दू तब न !

मुनीम : ओह ! तो इसका मतलब है, उनके संवाद भी आप ही बोलेंगे ?

राधेश्याम : और नही तो ! मैं जानता हूं, भाई साहब शब्दों के प्रवाह से बहुत डरते हैं। इसलिए मुझे हर समय सचेत रहना होगा।

शेखर : फिर तो आप ऐसा करें, उनके होंठों पर जो शब्द एकाएक लड़खड़ाने लगें, आप उन्हें तत्काल दबोच लेवें।

राधेश्याम : बेशक ! यही करना पड़ेगा।

मुनीम : (हंसते हुए) वाह भई, यह हुई न बात। फिर तो समझ लो, हमारा तीर सही जगह पर लगेगा।

राधेश्याम : इसमे क्या शक है ? हमें तो आपके निर्देशानुसार चलना है।

शेखर : मुनीमजी, आपका निर्देशन तो वाकई कमाल का है। मैंने तो आपसे केवल जिक्र ही किया था कि आपने तो उसे नाटक का ही रूप दे डाला और अब रिहर्सल भी चालू कर दी।

मुनीम : ऐसे मामलों मे अधिक सोचने में वक्त नही गवाना चाहिए। जब घनश्यामदासजी से यह भूल हो गई कि उन्होने मकान का पट्टा लालाजी के हाथ में थमा दिया तो अब कुछ-न-कुछ हल तो निकालना ही है उसका।

शेखर : यह तो आपका सही सोचना है। क्योंकि पिताजी उस पट्टे का कभी भी दुरुपयोग कर सकते हैं।

मुनीम : इसी को रोकने के लिए ही तो 'स्वामीजी' को आगे लाना पड़ रहा है।

शेखर : 'स्वामी' जी यदि अधिक लालच देकर रिश्ते की कोई नई बात छेड़ेंगे तो पिताजी फौरन मान जाएगे। उन्हे यह 'लालच' ही तो तरसा रहा है।

मुनीम : शेखर बाबू, मैं लालाजी की कमजोरियो को खूब अच्छी तरह जानता हूं। 'लक्ष्मी' को पाने के लिए वे कुछ भी कर सकते है।

शेखर : यही तो दुर्भाग्य है हमारा कि हमारे यहां कभी सरस्वती नही आती।

मुनीम : खैर, अब निराश होने की बात नही है। बाबू राधेश्यामजी, अब आप इस नाटक के पहले सीन की तैयारी पूरी कर लीजिए।

राधेश्याम : जैसी आपकी आज्ञा। भाई साहब को साथ लेकर अभी मंच पर पहुंच जाते है।

शेखर : यह अच्छा है, मच पर मुनीमजी को स्वयं नही आना पड़ेगा।

राधेश्याम : डायरेक्टर कभी मच पर नही आता। आते हैं केवल कलाकार।

मुनीम : डायरेक्टर तो पर्दे की ओट में रहकर ही नाटक को आगे बढ़ाता है।

शेखर : यह तो ठीक है, पर 'स्वामीजी' की बात आपके दिमाग में उपजी कैसे ?

मुनीम : लालाजी को स्वामीजी के बारे में यह पता है कि वे शादी के दलाल है। एक बार उनका जिक्र भी हुआ था।

राधेश्याम : ओह, तभी आपने स्वामीजी को बीच में लाने की बात सोची।

शेखर : स्वामीजी यदि इन दिनों यहीं हैं और उन्हें इस नाटक की जानकारी मिल गई तो ?

मुनीम : वे यहां नहीं हैं, कहीं तीर्थयात्रा पर गए हुए है।

राधेश्याम : पर आपने भाई साहब को ही स्वामीजी की भूमिका के लिए क्यो चुना ?

मुनीम : इसके बिना नाटक में जो रस आना चाहिए, वो नहीं आ पाता।

राधेश्याम : ठीक है, पर नाटक का पटाक्षेप कैसे होगा ?

मुनीम : इसकी आप चिन्ता न करें। नाटक शुरू होगा तो पटाक्षेप भी होगा।

राधेश्याम : पर यह तो बताइए, शेखर बाबू यह अंगूठी कौन-से सीन में पहनानी है ?

मुनीम : दूसरे सीन में।

राधेश्याम : और शेखर बाबू ने जो चेक दिये है, वो ?

मुनीम : वो दोनो चेक भी अगूठी के साथ ही ले जाने है।

राधेश्याम : हमारे भाई साहब इन चेंको की बात को नही पचा पा रहे है। वो कहते है, शेखर बाबू की रकम को वे अपनी रकम कैसे बताए ?

मुनीम : अजी, यह केवल नाटक है। नाटक का उद्देश्य कभी अपवित्र नहीं होता।

राधेश्याम : पर यह बात उनके गले कौन उतारे ?

मुनीम : मैं चलकर उन्हें समझाता हूं। आप मेरे साथ चलिए।

शेखर : इधर मैं भी अपनी मम्मी के कानों में ये सारी बातें डाल देता हू।

मुनीम : क्यो नही ? वे समझदार है, उन्हें यह नाटक देखकर सबसे अधिक खुशी होगी। (राधेश्याम से) चलिए।

[दोनों का प्रस्थान। शेखर अन्दर चला जाता है।]

दृश्य : तीन

[लाला भजनलाल का वही मकान। दोपहर का समय। लाला बैठा कुछ कागज देख रहा है। भागवंती पास बैठी थाली में दाल चुग रही है।]

भागवंती : अब चुप क्यो हो गए? अब भी जी नही भरा?

लाला : तुम अपनी ही कहती रहोगी या कुछ मेरी भी सुनोगी?

भागवंती : क्या सुनू? बिरादरी मे यह बात कही फूट गई तो मुह दिखलाने लायक नही रहेंगे।

लाला : क्या किया है मैंने, जो ऐसी बात कह रही हो?

भागवती : क्या किया! यह कहो—क्या नही किया? विपदाओं की चपेट मे आए हुए पर रहम करना तो दूर, आपने उनका रहा-सहा आसरा भी छीन लिया।

लाला : भागवती! जो बात तुम्हारी समझ के बाहर है, उस पर बहस मत किया करो। कुछ जानती तो हो नही, बेमतलब की टर्टर्-टर्टर् कर रही हो।

भागवती : क्या? मैं टर्टर् कर रही हू?

लाला : और नही तो। सुनो, बाबू घनश्यामदास के केवल तीन बेटिया हैं। बेटा कोई है नही।

भागवती : यह तो मुझे भी पता है।

लाला : तुम्हे कुछ पता नही है। दो बेटियां उन्होने ब्याह दी। अब यह तीसरी है। इसकी शादी भी उन्हे अपनी प्रतिष्ठा के अनुकूल करनी है। क्या तुम यह चाहती हो, अब तक उनकी बनी-बनाई इज्जत मिट्टी में मिल जाए? बोलो।

भागवंती : भला ऐसी बुरी कौन चीतेगा?

लाला : फिर अभी उन्होने पट्टा ही तो भिजवाया है। शेखर या सीमा के नाम कोठी तो नही की?

भागवती : लाचारी मे वे यह भी कर देगे। पर जरा यह तो सोचिए, कोठी से हाथ धोने के बाद वे बेचारे रहेगे कहा?

लाला : यह सब बाद की बातें है। लोग किराये के मकानों में रहते नही है क्या? फिर आठ सौ रुपये उन्हें पेन्शन के मिलते है।

भागवती : आपके लिए तो पैसा ही सब कुछ है।

लाला : हा, है।

भागवती : पर, ऐसा पैसा किस काम का जो दूसरो का बसा-बसाया घर

उजाड दे।

लाला : तुमसे वहस करके मुझे अपना दिमाग खराब नही करना।

भागवंती : दिमाग तो आपने मेरा खराब कर डाला। परसों शाम आपके साथ जो स्वामीजी आए थे। कौन थे वे?

लाला : वे जिन्होंने भगवे कपड़े पहन रखे थे?

भागवती : हा-हा, वो ही। बड़े ध्यान से उनके साथ गुपचुप कर रहे थे।

लाला : तुम तो ऐसे कह रही हो, जैसे वे कोई कुख्यात तस्कर हों। अरे, वे महेशानन्द आश्रम के महन्तजी है। बहुत पहुचे हुए।

भागवंती : होंगे। पर उनके साथ शादी-ब्याह की क्या खुसर-फुसर हो रही थी?

लाला : यह तुम्हे कैसे मालूम?

भागवंती : यहा चौखट के पास खड़ी-खड़ी मैं सब सुन रही थी। आप उनसे कह रहे थे, शेखर की शादी वहा होगी, जहा रुपयो की थैलिया खुलेंगी। कहिए न नही हो रही थी ये बातें?

लाला : बेकार मेरा सिर मत खपाओ। तुम्हें तो किसी बात की भनक पड़नी चाहिए। फिर उसे राई का पहाड़ बनाते देर नहीं लगाती।

राधेश्याम : (बाहर से आवाज देता है) लालाजी घर मे हैं?

लाला : कौन?

राधेश्याम : मैं, राधेश्याम। स्वामीजी महाराज पधारे है।

लाला : भागवती, तुम अन्दर जाओ। अभी जिनकी बात चल रही थी, वो ही आए हैं। उनके आगे कोई ऐसी-वैसी घटिया बात मत करना कि अर्थ का अनर्थ हो जाय।

भागवंती : मुझे क्या पडी है बीच मे बोलने की। मैं यहा आऊगी ही क्यों? आप जानें आपका काम।

[भागवंती का प्रस्थान]

लाला : (उठकर सामने जाता है) पधारिए-पधारिए, स्वामीजी। नमस्कार।

स्वामी, राधेश्याम : (दोनों एक साथ प्रवेश करते हुए) नमस्कार-नमस्कार!

स्वामी : देर तो नही हुई हमे?

लाला : अजी नही महाराज। आप तो बिल्कुल सही समय पर पधारे है। बैठिए।

स्वामी : (बैठता हुआ) कल का कार्यक्रम ठीक रहा?

लाला : जी, आपके सान्निध्य मे कोई कार्यक्रम हो, उसमें भला कोई त्रुटि

रह सकती है ? अब यह बताइए, उस कन्या की फोटू तो साथ लाए हैं न ?

राधेश्याम : क्यो नही ? (जेब से फोटू निकालकर देता हुआ) यह लीजिए।

लाला : (फोटो लेता हुआ) लड़के को दिखला दू।

राधेश्याम : अजी, यह बात कही उलटी तो नही पड़ जाएगी ?

लाला : उलटी क्यो पड़ जाएगी, मैं कहता हूं, यह फोटो देखते ही वो लटटू हो जाएगा।

राधेश्याम : यह तब न, जब घनश्यामदास की लड़की से इक्कीस हो।

लाला : घनश्यामदास की लड़की यद्यपि मैंने देखी तो नही है, पर यह डंके की चोट कह सकता हूं इसके आगे वो दस पैसे भी नही है।

राधेश्याम : फिर तो ठीक है ।

स्वामी : आपका यह सोचना तो गलत निकला कि घनश्यामदास यहा पहुच गया होगा।

राधेश्याम : सोचा तो मैंने यही था।

लाला : भैयाजी, मैंने तो आपको पहले ही कह दिया था कि वो मक्कार अब नही आएगा।

स्वामी : क्या उसने कोई इत्तला भी नही की ?

लाला : और बात ही क्या है ?

स्वामी : लेकिन ऐसा होना नही चाहिए। आदमी है तो खरा। मेरा तो वो शिष्य भी रह चुका है।

लाला : कुछ भी कहो, मुझे वो आदमी शुरू से ही नही जचा।

राधेश्याम : आपकी परख सही है। समधी बनने जैसा मादा उसमे नही है। कल मुहूर्त्त का दिन है, अभी तक उसने मुह भी नही दिखलाया।

लाला : अजी, अब तो उसका जिक्र करना ही व्यर्थ है। बस, आप अपनी बताइए; आप तो पूरी तरह से तैयार है न !

राधेश्याम : क्यों नही ? हम पूरी तैयारी के साथ आए है।

स्वामी : लड़के के विषय मे या किसी और के बारे में कुछ जानना हो तो पहले कह दीजिए।

लाला : हा-हा···।

स्वामी : लालाजी अपने मन में कोई चोर नही रखते। क्यो लालाजी ?

लाला : हा-हा, रिश्तेदारी मे हर बात साफ रहनी चाहिए।

राधेश्याम : एक बात पूछूं ?

लाला : क्यों नही ?

राधेश्याम : बाबू घनश्यामदास की कोठी का यह क्या किस्सा है ? कहते है,

वो अपनी कोठी आपके यहां गिरवी रखने को है।

लाला : कोठी गिरवी रखने को है !···हूं···! (शब्दों को मुंह में चबाते हुए) समझ गया। भैयाजी, इस बात को आप यहीं रहने दें तो अच्छा है। मैंने उस जैसा दोगला आदमी कहीं नहीं देखा।

राधेश्याम : वो कैसे ?

लाला : देखिए भैयाजी, चोरी की खबर सुनते ही मैं उसके घर गया इस ख्याल से कि उसका हौसला पस्त न हो, उसे हिम्मत बंधाएं।

राधेश्याम : यह तो आपने बड़ी समझदारी का काम किया।

लाला : पर सामने वाला भी अपनी समझदारी दिखलाए तब न !

राधेश्याम : बिल्कुल सही फरमाया आपने। ताली दोनों हाथ मिलाने से बजती है।

लाला : मुझे देखते ही वह क्या बोला—"लालाजी, आप चोरी की यह खबर सुनकर कोई चिन्ता न करें। मैं अपनी लड़की की शादी उसी धूमधाम से करूंगा। ऐसी चोरियों से मैं नहीं घबराता।"

स्वामी : उस समय उसे इस तरह की बात नहीं करनी चाहिए।

लाला : स्वामीजी, मैंने उसे यही समझाया—शादी की बात अभी न करें। पैसा हाथ का मैल है यह मैं मानता हूं। आज है, कल नहीं। इससे रिश्तों पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

स्वामी : यह तो आपने लाख रुपयों की बात कही। फिर, वह क्या बोला।

लाला : बोला—फर्क पड़े भी तो पड़ने नहीं दूंगा। अपनी लाखों की कोठी बेचकर भी शादी में कोई कमी नहीं रखूंगा।

स्वामी : इस पर आपने क्या कहा ?

लाला : मैंने कुछ कहना चाहा कि उसी समय एक फिल्मी खलनायक की तरह रंग बदलकर अचानक वह मेरे पैरों में पड़ गया और बुरी तरह से मिमियाने लगा।

स्वामी : वो क्यों ?

लाला : बोला—मेरी सारी इज्जत अब आपके भरोसे है। आप चाहें तो मुझे उबार सकते हैं।

राधेश्याम : अच्छा ! ऐसा नाटक किया उसने !

लाला : बिल्कुल। एक दफे तो मैं भी सकपका गया। फिर, जब बात समझ में आई तो जाकर तसल्ली हुई।

स्वामी : तब वो तो पानी-पानी हो गया होगा ?

लाला : वो तो होना ही था। मैंने उनसे कहा—बाबू घनश्यामदास ! मुझसे जो भी होगा, मैं आपकी पूरी मदद करूंगा।

स्वामी : यह आपने भली बात कही। वो फिर क्या बोला ?

लाला : बोला कही से आप मुझे दो लाख रुपये दिलवा दीजिए। मेरी कोठी का यह पट्टा है। कही गिरवी रखवाकर किसी तरह यह उपकार मुझ पर जरूर कीजिए।

स्वामी : ओह! जमीन पर उतर आने के लिए यह उसने अच्छी भूमिका बनाई! आप तो फिर पिघल गए होंगे!

लाला : उस समय माहौल ही कुछ ऐसा बन गया कि मुझे तो दया आ गई।

राधेश्याम : फिर क्या हुआ ?

लाला : मैंने उनसे कहा—देखो बाबू, आपकी नाक ही मेरी नाक है। इसे कभी नीचे नही होने दूगा।

राधेश्याम : इससे अधिक अपनत्व की और क्या बात हो सकती है ?

लाला : मैं बोला—रुपयों-पैसों की सारी व्यवस्था मैं आपके लिए कर दूगा, पर कोठी की बात मेरे और आपके बीच ही रहनी चाहिए।

राधेश्याम : बिल्कुल ठीक।

लाला : यह कभी 'लीक आउट' नही होनी चाहिए। बोला—ठीक है। मैंने कहा—दो लाख वैसे तो कोई बड़ी रकम नही है, पर इसे थोड़ी भी नही कह सकते। इसलिए जरा लिखा-पढ़ी हो जाए तो कोई हर्ज नही है। क्यो, मैंने गलत तो नही कहा ?

राधेश्याम : यह तो व्यवहार की बात थी।

स्वाती : फिर तो लालाजी आपने उसे कचहरी भी बुलाया होगा ?

लाला : इसी बात पर तो गाड़ी अटक गई। बोला—लिखा-पढी हमारे दिलो मे होनी चाहिए। कोर्ट-कचहरी मे नही। भला यह कोई बात हुई ?

राधेश्याम : पट्टा उसने दे दिया आपको ?

लाला : दे दिया, पर उसको बैठा चाटू क्या ? पट्टे की फोटो स्टेट कॉपी बनाकर अपने पास रख ली हो तो क्या पता।

राधेश्याम : फिर तो आप अकड़ गए होंगे ?

लाला : अकडता कैसे नही जी। मैंने तो उसी समय आखो मे डोरे डाल लिये। बोला—बाबू घनश्यामदास, बेटी के ब्याह के लिए बाप को क्या कुछ नही करना पड़ता। कभी-कभी तो अपने आपको भी बेच देना पड़ता है। यह तो एक मामूली कोठी है।

राधेश्याम : खूब कहा आपने।

स्वामी : लालाजी, अन्दाज मे वह कोठी कितने की होगी ?

लाला : कितने की ! अजी कोई उसकी टूटी दीवारों को देख ले तो उसके नजदीक न जाए। खरीदे कौन उसे ?

राधेश्याम : सही कहा। कौन खरीदे ?

स्वामी : यदि उसे तुड़वाकर ईंटें और जमीन वेचें तो ?

लाला : मुश्किल से कोई लाख-सवा लाख दे जाए तो गनीमत समझो।

स्वामी : बस !

लाला : और क्या ?

राधेश्याम : फिर तो दो लाख के बदले उन्हे कोठी का पट्टा लिखा-पढी करके देने में हील-हुज्जत नही करनी चाहिए थी।

लाला : अजी लिखा-पढ़ी करे कैसे ? दिल साफ हो, तव न !

स्वामी : वो कैसे ?

लाला : इधर, दो लाख लेकर शादी की वाहवाही लूट लेता और उधर कोठी के असली पट्टे के गुम हो जाने की रपट लिखवाकर उस पर भी अपना हक कायम रखता।

स्वामी : ओह ! तो अन्दरूनी यह चाल थी।

राधेश्याम : पर लालाजी की अनुभवी तेज आखो ने जल्दी ही पहचान लिया।

लाला : तभी तो कहकर भी कचहरी नही आया। न आए, मुझे क्या ? तू नही, और सही।

राधेश्याम अजी, यह तो अच्छा हुआ लालाजी। इससे हमारी वच्ची के भाग खुल गए। वरना हमें कहा मौका मिलता आप जैसो के यहा सबध जोड़ने का।

स्वामी : सयोग से शादी का मुहूर्त भी कल ही है।

राधेश्याम : अव तो शेखर वावू को बुला लीजिए।

स्वामी : हां, वो फोटो देख ले। उसे पसन्द आ जाय तो फिर शुभ कार्य में देरी न की जाय।

लाला : हा-हा। अभी बुलाए देता हू। वैसे, शादी की बात तो हमे ही तय करनी है।

राधेश्याम : हमारा मतलब लड़के की रजामन्दी से है।

लाला : उसकी आप चिन्ता न करें।

राधेश्याम : आपके रहते भला हमें क्या चिन्ता ? स्वामीजी, लालाजी को ये उपहार सौंप दीजिए। **(पोटली स्वामी को देता है)**

स्वामी : **(पोटली हाथ में लेता हुआ)** कितना है, इसमें ?

राधेश्याम : पूरे एक लाख इक्कीस हजार। यह तो केवल विरादरी मे दिखलाने के। **(एक पैकेट देता हुआ)** यह एक छोटा पैकेट लालाजी के लिए।

इसमें एक लाख हैं। देख लीजिए।

[स्वामी पोटली और पैकेट लाला को देता है। लाला दोनों को खोलकर अच्छी तरह देखता है और खुश होता है।]

स्वामी : अब तो आप खुश है।

लाला : अजी स्वामीजी, जिस समय आप मेरे यहां पहली दफे पधारे, आशा के दीप तो मेरे तभी प्रज्वलित हो गए थे।

स्वामी : यह तो आपका बड़प्पन है।

राधेश्याम : फिर, यह सब आप ही का तो है।

लाला : दूल्हे के लिए कुछ···। (कहता-कहता रुक जाता है)

राधेश्याम : ···बोलिए-बोलिए। उसके लिए भी हम···।

लाला : ···नहीं-नहीं। स्वामीजी पर मुझे पूरा भरोसा है। (आवाज देकर) शेखर ! ओ शेखर !

शेखर : (भीतर से) आया पिताजी।

लाला : अंगूठी लाए है न ?

राधेश्याम : जी। मेरे पास है। (निकालकर दिखलाता हुआ) यह रही।

लाला : शेखर को तुरन्त पहना दीजिए।

राधेश्याम : क्यों नही !

[शेखर भीतर से आता है]

शेखर : कहिए।

लाला : (फोटू देता हुआ) देख, इस घर के लिए मैंने यह बहू पसन्द की है। बहुत ही सुन्दर, पढ़ी-लिखी। साक्षात् लक्ष्मी है लक्ष्मी। अच्छी तरह देख ले। अपनी मा को भी दिखला आ।

[शेखर फोटू लेकर भीतर जाता है]

राधेश्याम : (स्वामी से) दूल्हा काफी होनहार है।

स्वामी : क्यों नही ? आखिर लालाजी का बेटा है। करोड़ों में नही तो लाखों में एक जरूर है।

[भागवंती फोटू लिये आती है]

लाला : क्यो, देख ली फोटो ?

भागवंती : देख ली। मुझे यह बहू पसन्द है।

लाला : देखो शेखर की मां, तुम्हे जरूरत है एक सुशील बहूरानी की और शेखर को चाहिए सुन्दर धर्मपत्नी। उसके बाद मेरा नम्बर आता है समधी देखने का। सो मैंने समधी भी देख लिया और खानदान भी।

भागवंती : रिश्ता जोड़ने से पहले ये बातें तो देखनी ही चाहिए।

लाला : अब मैं इन महानुभावों का परिचय करा देता हूं। ये है राधश्याम जी, लड़की के चाचा। यहां गोल मार्केट में इनकी कपड़े की दूकान है। लड़की के पिता इनके ममेरे भाई हैं।

भागवंती : (राधेश्याम से) आपके भाईसाहब…।

स्वामी : …घनश्यामदासजी के यहा से तो फिर कोई सन्देश नही आया?

लाला : राम भजो। मुझे तो शुरू से ही शक था, वे विश्वास वाले नहीं हैं। खैर, अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से हमें क्या मतलब।

भागवंती : देखिए भाई राधेश्यामजी, हमारा यह एक ही सुपुत्र है। शादी में किसी तरह की कोई कमी नही रहनी चाहिए।

लाला : शेखर की मा ठीक कहती है। किसी चीज की जरूरत हो तो आप हमसे बेझिझक कहिए। यही बात हमने उस बुढ्ढ घनश्यामदास को कही थी।

राधेश्याम : अजी साहब, आप तो हमारी बिरादरी के सर्वाधिक पूज्यवर हैं। जरूरत पड़ने पर आपके पास नही तो और कहा जाएंगे!

स्वामी : चलो, अब सारी बातें साफ हो गई।

लाला : आपका आशीर्वाद जो है।

स्वामी : अब धनश्यामदास का भी कोई झमेला नही रहा।

लाला : अजी, उसका तो नाम ही न लो। अब उसके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नही है।

राधेश्याम : रहना भी नही चाहिए।

भागवती : (लाला से) अजी फिर ऐसा कीजिए न, किसी के हाथ उनके मकान का पट्टा उन्हें भिजवा दीजिए।

स्वामी : बहनजी ठीक कहती है। लालाजी, अब आप यही कीजिए।

राधेश्याम : स्वामीजी, घनश्यामदासजी तो आपके शिष्य रह चुके हैं। तब तो आप उनके घर से पूरे परिचित होगे?

स्वामी : क्यो नही? फिर ऐसा कीजिए, मुझे दीजिए वो पट्टा। मैं उसके यहां सौप ही नही आऊगा; बल्कि इस बेवकूफी-भरी हरकत के लिए फटकार भी सुनाकर आऊगा।

लाला : यह ठीक है। भागवती, मेरे बैग के अन्दर वाली जेब में रखा है वो पट्टा। लाकर स्वामीजी को सभला दो।

भागवती : अभी लाती हूं। (कहकर अन्दर जाती है)

राधेश्याम : मैं समझता हू, इससे लोगो मे, जो कानाफूसी हो रही है, वह समाप्त हो जायेगी।

स्वामी : और क्या !

राधेश्याम : फिर लालाजी, आपके ऊपर कोई उंगली उठाने की हिम्मत नही कर सकेगा ।

भागवती : (अन्दर से पट्टा लाकर देती हुई) यह लीजिए स्वामीजी ।

स्वामी : लाइए, मैं कल ही उसको या उसकी पत्नी पार्वती को ले जाकर दे आऊंगा ।

[बाहर से मुनीम का प्रवेश]

मुनीम : नमस्कार लालाजी ।

लाला : नमस्कार । ठीक वक्त पर आ गए मुनीमजी । शेखर की शादी तय कर दी है ।

मुनीम : बधाई है ।

लाला : पूछो कहा ?

मुनीम : वो मुझे मालूम है ।

लाला : आपको कुछ भी नही मालूम । पहले जो घनश्यामदास के यहा बात चली थी, वो टूट गई, अब तो इनके यहा नया रिश्ता हुआ है ।

मुनीम : (राधेश्याम से) आप कौन हैं ?

लाला : लड़की के चाचा राधेश्यामजी ! ये रहे इनके उपहार । (पोटली और पैकेट की ओर संकेत करता है)

मुनीम : यह तो और भी शुभ है ।

लाला : यह पूछिए, इनमें क्या है ?

मुनीम : क्या है ?

लाला : इस पोटली मे है एक लाख इक्कीस हजार और इस पैकेट मे है एक लाख । कुल कितने हुए ?

मुनीम : दो लाख इक्कीस हजार ।

लाला : यह रकम ले जाकर तिजोरी में. रख आइए । (चाबी निकालकर देता हुआ) यह लो चाबी ।

मुनीम : (चाबी लेता हुआ) लालाजी, यह भी एक अजीब संयोग है ।

लाला : वो क्या ?

मुनीम : अभी दो दिन पहले ही शेखर बाबू के नाम इतनी ही राशि के दो चैक आये ।

लाला : कहा से ?

मुनीम : एक अरावली उद्योग समूह से और दूसरा व्हाइट सीमेंट वर्क्स लिमिटेड से ।

लाला : वहां से बोनस की रकम आनी थी।

मुनीम : जी, वही रकम।

लाला : कहां है वो चेक ?

मुनीम : शेखर बाबू के पास हैं।

लाला . उसको देने की क्या दरकार थी। कहां है शेखर ?

मुनीम : यहीं-कहीं होंगे।

लाला : (आवाज देता है) शेखर, ओ शेखर ! अरे कहां मर गया ?

शेखर . (अन्दर से) आता हूं।

मुनीम : आप परेशान न होइए लालाजी। शेखर बाबू ने वो दोनो चेक बैंक मे जमा करा दिए होंगे।

शेखर : (प्रवेश करता हुआ) कहिए पिताजी।

लाला : बोनस के जो चेक आये थे, वो कहा है ?

शेखर : मैंने उन्हें भुना लिया।

लाला : क्यों ? वो रकम कहा है ?

शेखर : आपके सामने जो पड़ी है।

लाला : मैं समझा नही।

स्वामी : (दाढ़ी-मूंछ उतारता हुआ) मैं समझाता हूं लालाजी।

लाला : (हैरान होता हुआ) आप ! घनश्यामदासजी !

स्वामी : हा, अच्छी तरह पहचान लीजिए।

शेखर : ये ही है इस लड़की (फोटू दिखलाकर) के पापाजी, जिन्हे अब तक न जाने क्या-क्या सुना डाला आपने।

लाला : शेखर !

स्वामी : इसमे इनका कोई कसूर नही है।

लाला : फिर ये रुपये !

भागवती : इस नाटक के लिए भुनाए गए हैं, मेरे कहने पर।

लाला : नाटक ! कैसा नाटक !

भागवंती : जो आपके सामने अभी खेला गया।

लाला : क्या ?

भागवती : क्या का अब कोई अर्थ नही है। आपको रुपये मिल गए और शेखर को मिल गई मनचाही सीमा।

मुनीम : घनश्यामदासजी की बेटी।

भागवंती : पैसों के लालच मे आप यदि कई-कई रंग बदल सकते है तो क्या हम आपकी इस बुरी आदत को मिटाने के लिए कोई नया नाटक नही खेल सकते। कहिए !

लाला : क्यों···नहीं···!

भागवंती : अब आप घनश्यामदासजी से कहिए कि ये शेखर को अंगूठी पहनाए।

लाला : जरूर पहनाएं।

[घनश्यामदास शेखर की उंगली में अगूठी पहनाते है कि सब तालियां बजाते है। उस समय लाला का मुंह देखते बनता है—बिदका-सा, एकदम स्थिर।]

कोल्ड कॉफी

पात्र-परिचय

साहब : ऑफिस का अधिकारी
सोहन : चपरासी
बड़े बाबू : हैडक्लर्क
शर्माजी : टेंडर लिपिक
खन्ना : लिपिक
सरदारजी : लिपिक
गुलाम हुसैन : लिपिक
सुनीता : स्टैनो
आगन्तुक : जिसे नया रिजनल मैनेजर समझ लिया गया

15 अगस्त, 1986 को नाटक 'कोल्ड कॉफी' की पहली प्रस्तुति रेलवे प्रेक्षागृह, बीकानेर में दी गई। इसका निर्देशन किया श्री सतीश शर्मा ने।

इस नाटक का आकाशवाणी, बीकानेर की ओर से कई बार रेडियो-प्रसारण हो चुका है।

दृश्य : एक

[कार्यालय में केवल शर्मा बाबू बैठे दिखाई दे रहे है, बाकी सारी कुर्सियां खाली। दायीं ओर बरामदे में चपरासी सोहन अपने स्टूल पर बैठा आगन्तुक से वार्ता करने में व्यस्त है। बायीं ओर साहब का केबिन खाली पड़ा है।]

आगन्तुक : साहब कब तक आ जाएंगे ?

सोहन : कह दिया न भई, मुझे नहीं मालूम।

आगन्तुक : फिर भी, कुछ तो बता सकते हो ?

सोहन : आप बेमतलब का सिर खपाएंगे या···।

आगन्तुक : ···लो सिगरेट पीओ। (सिगरेट का पैकेट आगे करता है)

सोहन : (खुश होकर, पैकेट से एक सिगरेट निकालकर) हां···यह हुई न बात ! नशा-पत्ता किए बिना मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। (सिगरेट जलाकर पैकेट अपनी जेब में रखते हुए) हां, अब कहो··· क्या पूछ रहे थे ?

आगन्तुक : साहब का आज क्या प्रोग्राम है ?

सोहन : देखो महाशय अभी दस-चालीस हुए है। ग्यारह से पहले साहब का आना मुश्किल है।

आगन्तुक : ओह···तब तो बीस मिनट और वेट करना होगा।

सोहन : इसके लिए तो भला मैं क्या कर सकता हूं। अरे हां···यह बताइए, कहीं आप टेन्डर-वेन्डर के सिलसिले में तो नहीं आए है ?

आगन्तुक : हां, हां···इसी सिलसिले में बात करनी है।

सोहन : तो, यह कहो ने। इसके लिए साहब से मिलने की क्या जरूरत है। अन्दर डीलिंग क्लर्क शर्माजी बैठे है, आप उन्हीं से मिल लीजिए।

आगन्तुक : अन्दर कहां है ? (अन्दर जाने को होता है)

सोहन : ठहरो। मैं अभी पूछकर आता हूं। शर्माजी के पास आपसे मिलने के लिए अभी टाइम भी है या नहीं।

आगन्तुक : (नोट पकड़ाते हुए) बच्चों की मिठाई के लिए···।

सोहन : (बीस का नोट तुरन्त जेब में रखते हुए) इसकी क्या जरूरत थी। मैं अभी पूछकर आया।

: जाइए साहब।

आगन्तुक : तो शर्माजी ने मिलने की हां भर दी ?

सोहन क्यों नहीं ? भला मेरा कहा टाल सकते हैं ? आप मजे से अन्दर जाइए।

आगन्तुक : धन्यवाद।

[नेपथ्य में स्कूटर का हॉर्न सुनाई पड़ता है]

सोहन : (स्वगत) साहब आ गए दिखते हैं।

[लपककर बाहर जाता है और तुरन्त साहब के साथ बैग और हेलमेट लिये लौटता है]

साहब क्या बात है ? अभी तक कोई नहीं आया।

सोहन - कोई आता तो साहब मैं यों ही नहीं बैठा रहता। बस, एक शर्माजी आए हैं।

साहब ' (स्वगत) उसकी पंक्च्वौलिटी को तो मैं समझता हूं। उसके पास पब्लिक डीलिंग है। ऐसी डीलिंग कि टाइम पर नहीं आए तो बच्चों को पब्लिक स्कूल नहीं भेज सकता।

सोहन क्या फरमाया साहब ?

साहब : कुछ नहीं...। (कार्यालय में प्रवेश करते हुए) बड़े बाबू भी अभी तक नहीं आए ?

सोहन : वे तो साहब बस आने ही वाले हैं। पता नहीं आज इतने लेट कैसे हो गए।

साहब : गुलाम मोहम्मद ?

सोहन : उनका लड़का आकर कह गया है कि आज उनके यहां कोई मेहमान आए हुए हैं। इसलिए वे एक घंटा लेट आएंगे।

साहब : हुं...।

सोहन : और मोहन बाबू मेम साहब की भानजी को पहुंचाने आदर्श कालोनी गए हैं।

साहब : ठीक है...ठीक है। जब भी कोई आए, मेरे पास अन्दर भेजना।

सोहन : हुक्म साहब। मोहन बाबू तो साहब वहां से बैंक जाएंगे, मेम साहब की एक सहेली का चेक जमा कराने।

साहब : अच्छा-अच्छा। तुम चपर-चपर बहुत करते हो। जितना पूछा जाए, उतना ही बोला करो।

सोहन : ठीक साहब।

साहब : (अपने केबिन में जाते-जाते) किसी का फोन तो नहीं आया ?

सोहन : जी नहीं। अलबत्ता सुनीताजी के लिए उनकी एक फ्रैण्ड का फोन जरूर आया।

साहब : तो सुनीता भी अभी तक नही आई।

सोहन : जी साहब।

साहब : हुं''।

शर्मा : (आगन्तुक से) तो आपको टेन्डर फार्म चाहिए ?

आगन्तुक : हा, दो टेन्डर फार्म दे दीजिए।

शर्मा : दो दे देता हूं। लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि अर्नेस्ट मनी अलग-अलग जमा करानी होगी।

आगन्तुक : करा दूंगा साहब।

शर्मा : तो ठीक है, यह लीजिए। (फार्म देता है)

आगन्तुक : फार्म के क्या कुछ देने है।

शर्मा : पचास-पचास रुपये।

आगन्तुक · (रुपये देते हुए) ये लीजिए। (शर्मा का हाथ दबाकर) हम नये है, जरा हमारा भी ध्यान रखिए।

शर्मा : भई, हम तो सबका ही ख्याल रखते है।

आगन्तुक : अजी, आप ख्याल नही रखेंगे तो फिर हमारा काम हो लिया।

शर्मा : ऐसी क्या बात है ?

आगन्तुक : अजी साहब, आप हमें ध्यान में रखेंगे तो हमे आपका ख्याल बना रहेगा।

शर्मा : लेकिन भैया, मैं अकेला तो नही हूं। मेरे ऊपर भी तो अफसर है।

आगन्तुक : यह हम कौन-सा जानते नही। यकीन रखिए हमें उनका भी ध्यान रहेगा।

शर्मा (आवाज देकर) सोहन।

सोहन : आया। (पास आकर) कहिए बाबू साहब, क्या सेवा है।

शर्मा : इन्हें साहब के पास ले जाओ।

सोहन : चलिए साहब।

शर्मा : (फाइल देते हुए) यह भी ले जाओ।

[सोहन आगन्तुक को साहब के केबिन में पहुंचा आता है और फाइल भूल से साथ रखे रहता है।]

: सोहन !

सोहन : जी !

शर्मा : यह फाइल वापस क्यों ले आया ?

सोहन . ओह, यह तो भूल ही गया।

शर्मा : साहब के आगे रख आ।

: अभी लो।

[सोहन बाहर बरामदे में आकर अपनी जगह बैठता है कि]

सोहन : नमस्ते।

सुनीता : नमस्ते।

सोहन साहब ने आपको याद किया है।

सुनीता : साहब आ गए।

सोहन : कभी के आए बैठे हैं।

सुनीता : मूड कैसा है ?

सोहन . कोई खास अच्छा नही है।

[सुनीता कार्यालय के अन्दर जाने को होती है]

: आपका फोन आया था।

सुनीता : कहा से ?

सोहन : कोई पी० शंकर बोल रहा था।

सुनीता : कौन पी० शंकर ? क्या कह रहा था ?

सोहन : उसे तो मैं नही जानता। लेकिन उसकी बातो से मालूम हुआ कि गगा थियेटर में पहले शो के लिए वह आपका इन्तजार करेगा।

सुनीता : ठीक है। समझ गई।

सोहन ' कल शाम को भी उसका फोन आया था, आपके जाने के बाद।

सुनीता : ठीक है। ठीक है।

आगन्तुक : (उठते हुए) अच्छा साहब, अब मैं चलता हूं।

साहब : कल आपको एक बार और आना पड़ेगा।

आगन्तुक . क्यों नही ? जरूर आऊगा।

साहब : हा, आपके आए बिना कार्यवाही पूरी नही होगी।

आगन्तुक : अच्छा, नमस्कार।

साहब : नमस्कार।

[आगन्तुक का प्रस्थान]

: ...(बेल बजाते हैं)

सोहन : (प्रवेश कर) जी साहब।

साहब : सुनीता आ गई।

सोहन : जी, अभी-अभी आई हैं।

साहब : यहा भेजो।

सोहन : जी।

[सोहन कार्यालय में आकर सुनीता को अन्दर भेजता है]

सुनीता : गुड मार्निंग सर।

साहब : गुड मॉर्निंग।

सुनीता : आपने मुझे याद किया सर ?

साहब : हां। आजकल तुम बहुत लेट आ रही हो ?

सुनीता : सॉरी सर। मैं अपनी मम्मी को मन्दिर ले गई थी। आज पूर्णिमा है। इसलिए थोड़ी लेट हो गई।

साहब : यह कोई आज की ही बात नही है। आए दिन यह शिकायत रहती है'''भई, ऐसे कैसे काम चलेगा ?

सुनीता : कल से सर राइट टाइम आने की पूरी-पूरी चेष्टा करूंगी।

साहब : ठीक है। हैड क्वार्ट्‌र्स से बाथरूम रिपेयर का रिमाइण्डर आया था, उसका क्या हुआ।

सुनीता : वो तो'''सर, मैं आपको कभी की पुटअप कर चुकी हूं।

साहब : फाइल कहा है ?

सुनीता : यही होगी सर !

साहब : देखना जरा।

सुनीता : (रैक में से ढूंढकर देती हुई) यह रही सर !

साहब : ठीक है। मैं अभी देखता हू।

सुनीता : अब मैं जाऊं सर !

साहब : हा'''हा'''अब तुम जाओ।

[सुनीता कार्यालय में आकर अपनी सीट पर बैठती है। इस बीच सरदारजी और बड़े बाबू भी आकर अपनी-अपनी सीट पर बैठ चुके थे। साहब उठकर आते है।]

बड़े बाबू : नमस्कार साहब।

साहब : नमस्कार बड़े बाबू, नमस्कार।

बड़े बाबू : सोहन ने कहा कि आपने मुझे याद फरमाया साहब ?

साहब : हा, बड़े बाबू। मैं कुछ दिनों से देख रहा हूं कि अब यह ऑफिस, ऑफिस नही रहा बल्कि कोई होस्टल हो गया है।

बड़े बाबू : ऐसी तो कोई बात नही है, साहब।

साहब : बिल्कुल यही बात है। जब ऑफिस के बड़े बाबू दस-पचास पर ऑफिस आएगे तो दूसरे बाबुओ का तो फिर कहना ही क्या ?

बड़े बाबू : यह ऑफिस की घड़ी तो साहब हमेशा आगे रहती है। कितनी ही बार इसकी रिपेयर करा दी लेकिन यह कोई दो दिन तो ठीक चलती है, उसके बाद फिर आगे हो जाती है।

साहब : ठीक यही हालत इस ऑफिस की है। समय पर आने के लिए दिए गए निर्देशों का दो-चार दिन तो पालन होता है, उसके बाद फिर

यही रवैया। क्यों सरदारजी, आपके ऑफिस आने का क्या टाइम है?

सरदार : साहब मैं तो प्राय राइट टाइम ही आने की कोशिश करता हूं'''।

साहब : पर भैंस बीमार हो जाने से प्राय लेट हो जाते हो। क्यों?

सरदार . क्या करू साहब? जानवर है, बीमारी-सिमारी तो लगी ही रहती है।

बडे बाबू . साहब! मोहनलाल अभी तक नही आया?

साहब · उसे मैंने कोई काम भेजा है।

शर्मा : मिस्टर खन्ना की तो साहब, हद ही हो गई। कोई भी दिन ऐसा नही, कि वो समय पर ऑफिस आये हो?

साहब . यह सब बड़े बाबू की कमजोरी है। इसके बारे में जब भी कहा जाता है, ये यह कहकर मामले को अवोइड कर देते हैं कि वह अपनी पत्नी को स्कूल छोड़ने जाता है।

सरदार · साहब यह तो कोई बात नही है। कल हम भी कहेंगे कि हम भी अपनी बेबी को कॉलेज छोड़कर आएगे।

साहब : सुन लिया बडे बाबू।

बडे बाबू : साहब, मैं क्या कर सकता हूं। मैं कोई थानेदार तो हूं नही जो डंडे के जोर पर सबको राइट टाइम आने के लिए मजबूर कर सकू।

साहब · बड़े बाबू, आपमें तो वो शक्ति है जो थानेदार मे तो क्या, बडे से बडे अफसर में नही होगी। कलम की ताकत तलवार की धार से तेज होती है।

बडे बाबू : यह सब कहने की बाते है साहब? हकीकत यह है कि ऑफिस का काम टीम वर्क से होता है, सख्ती से नही।

साहब : पर डिसिप्लेन भी तो कोई चीज होती है।

बड़े बाबू : क्यों नही'''यह अफसर पर निर्भर है।

[इतने मे गुलाम मोहम्मद का दौड़ते हुए प्रवेश]

गुलाम : सलाम साहब।

साहब : सलाम। क्या बात है खान? खैरियत तो है?

गुलाम : कहा साहब? मेहमान घर में तशरीफ लायें तो खैरियत कहा बच सकती है। सुबह से परेशान कर रखा है। लाहौल विला कूवत।

साहब : लेकिन क्या हुआ?

गुलाम : हमारी बेगम साहिबा के पहले शौहर अपनी खाला के इलाज के लिए आए है। उन्हें लेकर हॉस्पीटल गया। पूरे दो घण्टे हो गए, अभी तक तो डॉक्टर के दीदार ही नही हुए है।

साहब : डॉक्टर ने अभी तक अटैण्ड ही नही किया, तो आप उन्हें बीच मे छोड़कर कैसे चले आये ?

गुलाम : यह कहने के लिए कि शायद मुझे वहां घटा-डेढ़ घटा और लग सकता है।

साहब : यह तो ठीक है, लेकिन मैसर्स रामनाथ-शामनाथ वाला केस तो हमें देते जाओ।

गुलाम : साहब, मैं लच से पहले-पहले वापस आ रहा हूं। आते ही पहले यही केस निपटाऊंगा।

साहब : अजी, आप इस हालत में क्या निकालेंगे ! आप तो ऐसा करो, केस की फाइल बड़े बाबू को देते जाओ। आज उसका डिस्पोजल करना है।

गुलाम : लेकिन साहब, अभी तो मेरे पास चाबी नही है। घर पर ही रह गई है। फाइल अलमारी में रखी है।

साहब : फिर···।

गुलाम : यकीन रखिए साहब। आज मैं वो केस निपटाकर ही घर जाऊगा।

साहब : लेकिन याद रहे, आज यह केस निकल जाना चाहिए।

गुलाम : निकल जाएगा साहब।

साहब : क्या निकल जाएगा ? आपकी वर्किंग मैं जानता हूं। एक धेले का काम नही करते।

गुलाम : जरा धीरे बोलिए साहब। मैं दिल का मरीज हू। वीकनैस इतनी है कि मैं किसी का जोर से कहा हुआ सुन नही सकता।

साहब : तो आते समय अपने को भी चैक करवाते आना।

गुलाम : ठीक है साहब। अब मैं चलता हूं।

[गुलाम मोहम्मद का प्रस्थान]

साहब : कैसे-कैसे लोग है !

बड़े बाबू : साहब, अब ये वापस नही आएंगे। आज की गोच मना गए, समझो।

साहब : ऐसी बात है, तो आपको उन्हें रोकना चाहिए था ?

बड़े बाबू : आपके होते हुए भला मैं उन्हे कैसे रोकता ?

साहब : क्यों नही ? एग्जीक्यूटिव हैड तो आप ही है। आज यदि वो वापस नही आए तो यू कैन मार्क हिम ऐवसेण्ट।

बड़े बाबू : ठीक है साहब।

साहब : सरदारजी, आप जरा पी० एफ० एडवास की फाइल लेकर आइए।

[कहकर साहब का प्रस्थान]

[सरदार फाइल लेकर साहब के कक्ष में जाते हैं कि पीछे से खन्ना आकर अपनी सीट पर बैठ जाता है]

खन्ना : (आवाज देकर) सोहन।

सोहन : (प्रवेश कर) जी बाबू साहब।

खन्ना : जाकर भवानी को···चार चाय और एक कॉफी का कह आना। देखो तीन खाली कप एक्स्ट्रा लाना।

सोहन : समझ गया। अभी कह आता हूं। (प्रस्थान)

बड़े बाबू : यार खन्ना, तुम्हारे कारण हमें बहुत सुनना पड़ता है।

खन्ना : क्या बात हुई।

बड़े बाबू : तुम लेट जो आते हो।

खन्ना : बस, इतनी-सी बात।

बड़े बाबू : और नहीं तो?

खन्ना : साहब ने कुछ कह दिया होगा?

बड़े बाबू : यही समझ लो।

खन्ना : कोई बात नहीं। उन्हें मनाना मुझे आता है। हां, भाई लोगों में तो कोई नाराज नहीं है।

सुनीता : हमें भला आपसे क्या नाराजगी। फिर मुझे तो आप इस मामले में बिल्कुल न्यूटरल समझिए।

सरदार : (अन्दर आकर) अजी आप मौज करें। बस, साहब को कॉफी के लिए याद करते रहिएगा। आपकी फतह है।

[सोहन न्यूज पेपर लेकर साहब को देने जाता है।]

खन्ना : अरे चाय का क्या हुआ?

सोहन : आ रही है।

बड़े बाबू : मिस्टर शर्मा किट्सन कम्पनी के केस में क्या प्रोग्रेस है? हैड क्वार्टर्स से यह एक और रिमाइण्डर आ गया है।

शर्मा : बड़े बाबू, अभी यह फाइनल नहीं हुआ है। साहब के पास नजदीक में कोई डेट्स नहीं है कि उसे नेगोसिएसन के लिए बुलाया जा सके। इसीलिए पेन्डिंग में पड़ा है।

बड़े बाबू : आज उसे साहब को दुबारा पुटअप कर दो।

शर्मा : कर देता हूं।

बड़े बाबू : सरदारजी, एक डाक आपकी भी है।

सरदार : मेरी?

बड़े बाबू : हां, आपने अभी तक स्टेशनरी का डिमाण्ड नोट नहीं भेजा।

सरदार : वो तो साहब आज तैयार है।

[चायवाला चाय रखकर जाता है]

खन्ना : कॉफी अन्दर दे आना।

[चायवाला कॉफी का प्याला अन्दर दे आता है]

सरदार : (उठकर सुनीता के पास जाकर) यह डिमाण्ड नोट टाइप कर देना।

सुनीता : (स्वेटर बुनती-बुनती) रख दो।

सरदार : (धीरे से) आज शाम को मुण्डे की बर्थ डे है। (जोर से) आज ही टाइप करना है। (धीरे से) पार्टी रखी है। (जोर से) केवल तीन पेज है। (धीरे से) तुम्हे जरूर आना है। (जोर से) देखो एक यह ···एक यह···और एक रहा यह। (धीरे से) मैं ठीक छः बजे गाधी स्टेच्यू के पास तुम्हारा वेट करूंगा।

बड़े बाबू : यह क्या खुसर-फुसर हो रही है?

सरदार : कु···कुछ···नही। कह रहा हूं अभी यह टाइप नही हुआ तो आज यह डिस्पैच नही हो सकेगा।

[तभी अचानक साहब आ जाते है]

साहब : सुनती हो, कल तुम साड़ी पहनकर आना।

सुनीता : जी! मुझे साड़ी पहनकर आना है।

साहब : हा। यह इसलिए कि हमारे नये रीजनल मैनेजर साहब दो दिन हमारे ऑफिस का इन्स्पेक्शन करेंगे। हैड क्वार्टर्स से मल्होत्राजी का अभी फोन आया था। हो सकता है, वे आज ही आ जायें।

बडे बाबू : आज ही ?

साहब : हा। मल्होत्रा साहब ने यह भी कहा है कि इन्स्पेक्शन के मामले मे वे बहुत तेज हैं। इस तरह चुपके से आयेंगे कि आपको पता भी न चलेगा।

बड़े बाबू : यदि ऐसी बात है तो हमें सावधान रहना होगा। वे किसी भी समय आ सकते हैं।

साहब : करेक्ट। उनका कोई भरोसा नहीं है। इसलिए आप अपने कागजात और फाइलें ठीक कर लेवें। अभी, इसी समय।

बड़े बाबू : लेकिन, उन्हें हम पहचानेंगे कैसे ?

साहब : यही तो मुसीबत है। मैं भी तो उन्हें नहीं पहचानता।

बड़े बाबू : फिर तो पूरी तरह चौकन्ना रहना पड़ेगा।

साहब : बिल्कुल। वैसे मल्होत्रा साहब ने कुछ हिण्ट्स दिए हैं···।

बड़े बाबू : जैसे···।

साहब : वे अक्सर हल्का नीला या बादामी कलर का सफारी सूट पहनते हैं'''। सुनहरी फ्रेम का चश्मा लगाते है और हाथ में हमेशा काला मिनी बैग रखते हैं। और'''।

शर्मा : कहीं यह खास बात तो नहीं कि उनके फ्रेंचकट दाढ़ी है।

साहब : हां'''हां'''यही। तुम्हें कैसे मालूम ?

शर्मा : साहब, आपने ध्यान नहीं दिया। अभी-अभी जो महाशय आकर गए हैं, हो न हो, हमारे नये रीजनल मैनेजर साहब यही होंगे।

साहब : ओह'''! तुम बिल्कुल ठीक कहते हो। यह भी बादामी कलर का सूट पहने थे। दाढ़ी भी फ्रेंचकट'''चश्मा भी सुनहरी फ्रेम का'''लेकिन शायद हाथ में कोई बैग नहीं था।

शर्मा : था। साहब बिल्कुल यही काले रंग का मिनी बैग। मेरे पास मेज पर रख छोड़ा था।

साहब : तब तो गजब हो गया।

शर्मा : गजब क्या, मेरी तो छुट्टी ही हो गई समझो।

सोहन : मेरे ऊपर तो साहब उनकी मेहरबानी ही रही। जाते-जाते बच्चों की मिठाई के लिए कुछ-न-कुछ देकर ही गए।

बड़े बाबू : अरे मूर्ख, मिठाई के लिए दिए गए ये पैसे तुम्हारी आदत को पहचानने के लिए थे।

सोहन : (कान पकड़कर) फिर तो साहब गलती हो गई।

सुनीता : अब हमें यह सोचना है कि उनकी इस मीठी मार पर अब मरहम कैसे लगाया जाय ?

शर्मा : साहब, अब तो वे वापस आएंगे नहीं।

साहब : हां, आना तो उन्हें अब कल ही है।'''अरे हां'''एक बात तो मैं कहना भूल ही गया। मल्होत्रा साहब ने यह बात विशेष जोर देकर बतलाई है कि उन श्रीमानजी को कोल्ड कॉफी बेहद पसन्द है। कोल्ड कॉफी जाए तो समझो उन्हें सब कुछ मिल गया।

सुनीता : तब फिर इसका अरेन्जमेंट तो साहब मुझ पर छोड़िए।

शर्मा : दो-चार दफे उन्हें कोल्ड कॉफी दी नहीं, कि आज की सारी गलतियां माफ।

बड़े बाबू : मैं समझता हूं कल हमें उन्हें खुश करने में कोई भी कसर नहीं उठा रखनी है। (साहब को कुछ उदास देखकर) क्यों साहब, मैं गलत तो नहीं कह रहा ?

साहब : (अनमने से होकर) हां'''हां'''ठीक है। यही ठीक है।

बड़े बाबू : '''खन्ना, कल तुम्हारी मैडम किसी और के साथ स्कूल चली

जाएगी। तुम्हें दस मे पहले-पहले यहा आ जाना है।

खन्ना : जी। कल मैं उसे लीव दिलवा दूगा।

बड़े बाबू : मैं सोचता हूं, कल हम सबको नौ बजे तक यहा आ जाना चाहिए ताकि हर चीज तरीके से रखी दिखाई दे। सोहन, तुम्हें और भी जल्दी आना है।

सोहन : हुकुम साहब। आप बेफिकर रहिए। पूरे ऑफिस को काच की तरह चमका दूगा।

साहब : (शर्मा से) तुम जरा मेरे पास आओ। (बाकी छह से) आप सब अभी से काम मे लग जाओ, ध्यान रखिए, टिप-टाप मे कोई कमी नही रहे।

सभी : जी साहब।

[साहब के साथ शर्मा अन्दर जाता है और दूसरे सभी अपने-अपने कार्यों मे जुट जाते हैं। साहब शर्मा को कुछ सकेत समझाते हैं। धीरे-धीरे फेड आउट]

दृश्य : दो

[पूरा ऑफिस अच्छे ढंग से सजा हुआ है। सब अपनी-अपनी सीटों पर काम मे व्यस्त है। साहब घण्टी बजाते है।]

सोहन : जी साहब।

साहब : खन्ना को भेजना !

[सोहन बाहर जाकर खन्ना को अन्दर भेजता है।]

खन्ना : यैस सर।

साहब : कॉफी का अरेन्जमेण्ट हो गया ?

खन्ना : हा साहब। क्राकरी भी नई आ गई है।

साहब : गुड। जरा बड़े बाबू से पूछना कि गुलदस्तो का क्या हुआ ?

खन्ना : वे भी तैयार है साहब। बड़े बाबू फूल बाग से स्पेशल बनवाकर लाए है।

साहब : मतलब अपनी ओर से पूरी तैयारी है।

खन्ना : यैस सर !

साहब : बड़े बाबू को कहो कि एक बार सरसरी निगाह से सब चीज देख लेवें।

खन्ना : जी।

साहब : अच्छा चलो, मैं भी देख लेता हू।

[दोनो कार्यालय मे आते है]

: (सबको खड़े होते देखकर) बैठो-बैठो। हा···यह हुई न बात। आज लगता है कि कोई ऑफिस है। क्यो बड़े बाबू, फाइलें-वाइलें सब देख ली है ?

बड़े बाबू . जी, सब संभाल ली है।

साहब : कोई लूज पेपर तो नही है।

बड़े बाबू : नही साहब।

साहब : शर्मा, मैनेजर साहब कोई बात पूछें तो हिचकिचाओगे तो नही ?

शर्मा . नही साहब। आप बेफिकर रहिए।

साहब : वैरी गुड। हमें उनकी हर बात का ऐसी पोलाइटली से जवाब देना है कि उनका अन्त:करण स्वत: ही क्षमाशील हो जाए।

शर्मा : बिल्कुल ऐसा ही होगा।

साहब · अब आप लोग काम करें।

[कहकर साहब अपने कक्ष मे चले जाते है। वातावरण मे नि:स्तब्धता। आगन्तुक का प्रवेश]

सोहन . (खड़े होकर) सलाम साहब !

आगन्तुक : सलाम।

सोहन : (आगन्तुक का बैग लेते हुए) लाइए साहब, मुझे दे दीजिए।

आगन्तुक : नही-नही। मेरे पास ही रहने दो। इसमें कुछ भी नहीं है। साहब आ गए।

सोहन : जी। साहब तो कभी के पधार चुके।

आगन्तुक : आज इतनी जल्दी कैसे ? क्या कोई खास बात है ?

सोहन : नई···बात···नही-नहीं, ऐसी कोई बात नही है···हा, हा···आप जो पधारे हैं।

आगन्तुक : और···(मुस्कराता है) मैं अन्दर जा सकता हू ?

सोहन : क्यो, नही सर।

आगन्तुक : थैंक यू।

[आगन्तुक अन्दर कार्यालय मे जाता है तो सभी उठकर नमस्ते करते है। हैरान-सा होता हुआ वह शर्मा के पास जाकर खड़ा हो जाता है।]

शर्मा : आइए साहब आइए। बैठिए।

[आगन्तुक कुर्सी पर बैठ जाता है]

बड़े बाबू : सोहन।

सोहन : जी बड़े बाबू।

बड़े बाबू : अच्छी-सी कोल्ड कॉफी बनाकर ले आ।

सोहन : कितने कप साहब ?

बड़े बाबू : कितने क्या ? दस कप तो ले ही आ।

सोहन : अभी लाया साहब।

आगन्तुक : मेरे केस में आपने क्या सोचा बाबू साहब ?

शर्मा : अजी, आपका केस फाइनल हुआ समझो साहब। लीजिए, उस रोज आप सौ की जगह भूल से पाच सौ दे गए। यह लीजिए चार सौ वापस।

आगन्तुक : अजी, बाबू साहब यह तो रहने दीजिए।

शर्मा : नही-नही साहब। ऐसे कैसे हो सकता है ? दो टेण्डर फार्मों के केवल सौ होते है, पांच सौ नही।

आगन्तुक : यह तो मै भी जानता हूं। ये बाकी तो मेरी तुच्छ भेंट समझिए।

शर्मा : नही साहब, ऐसा मत कहिए।

आगन्तुक : अजी इसमें क्या बात है बाबू साहब ? मेरी बात भी मान लीजिए। रख लीजिए न साहब।

शर्मा : नही-नही साहब। आप तो पहले कॉफी पीजिए, कोल्ड कॉफी।

आगन्तुक : अरे-अरे, इसकी क्या जरूरत है ?

शर्मा : अजी यह तो बडे बाबू ने सबके लिए मगवाई है।

बड़े बाबू : हा-हां, पीजिए न साहब !

आगन्तुक : जैसी आपकी मर्जी। (कहकर कॉफी पीने लगता है)

सोहन : लीजिए साहब। (मिठाई का पैकेट देते हुए) कल आपने बच्चों के लिए मिठाई को कहा था, यह ले आया हू।

आगन्तुक : अरे, मैंने तो वो रुपये तुम्हारे बच्चों की मिठाई के लिए दिए थे।

सोहन : मेरे बच्चो के लिए ? साहब मेरे तो बच्चे ही नही है।

बड़े बाबू : (बीच में) हां, साहब ! यह बड़े प्रेम से पाच-सात दूकानें देखकर

अच्छी मिठाई लाया है। इसका आप दिल न तोड़ें। रख लीजिए न साहब ।

आगन्तुक : लेकिन'' यह सब'''।

बड़े बाबू : इसमें कोई बात नही है साहब । इसे आप अदरवाइज न लीजिए।

आगन्तुक : यह तो ठीक है'''लेकिन इतना सब-कुछ करने की क्या जरूरत है ?

बडे बाबू · अजी साहब, आप पहली बार हमारे मेहमान बनकर आए है। थोड़ी बहुत सेवा का मौका तो हमें भी दीजिए।

सोहन साहब आपसे मिलना चाह रहे हैं।

आगन्तुक : अच्छा।

[साहब के कक्ष में जाता है]

साहब : (खड़े होकर हाथ मिलाते हुए) गुड मार्निंग सर। कहकर फूलो का गुलदस्ता थमाते है।

आगन्तुक : (खिसियाना से) गुड मार्निंग ।

साहब : बैठिए सर !

आगन्तुक : (खड़े-खड़े) मैं समझा नही'''आज यह सब कुछ'''

साहब : अजी सर, पहले बैठिए तो सही।

[आगन्तुक कुर्सी पर बैठता है]

साहब : पहले तो आप यह बतलाइए क्या पिएगे ? ठण्डा या गर्म ?

आगन्तुक : अजी साहब, दोनों ही नही। मैंने अभी-अभी कोल्ड कॉफी ली है।

साहब : कोल्ड कॉफी । अहा'''बहुत अच्छी लगती है। सोहन !

सोहन : जी साहब।

साहब : बढ़िया-सी कोल्ड कॉफी।

सोहन : अभी लाया साहब।

आगन्तुक : अजी साहब, रहने दीजिए न।

साहब : नही'''नही'''। फौरन लेकर आ।

आगन्तुक : आप इतना तकल्लुफ क्यों करते है ?

साहब : इसमें तकल्लुफ की कोई बात नही है। अरे हा, कल आप अपना यह लिफाफा यही भूल गए थे।

आगन्तुक : यह तो आपके लिए है साहब। मेरी ओर से एक छोटा-सा गिफ्ट।

साहब : नो-नो। गिफ्ट तो सर मेरी ओर से दिया जाना चाहिए। प्लीज यह रख लीजिए। प्लीज।

सोहन : साहब, सुनीताजी ने कॉफी मंगवा ली है। आप भी पधारिए।

साहब : ओह, यह तो और भी अच्छा है। साथ में कुछ खाने को भी मिलेगा। चलिए सर।

आगन्तुक : च···लि···ए···।

[दोनों कार्यालय में आते है]

बड़े बाबू . हमे बड़ी खुशी है कि आज सुनीता की ओर से यह कोल्ड कॉफी दी जा रही है।

खन्ना : साथ मे ये बीकानेरी रसगुल्ले और भुजिया भी।

साहब वदले में सुनीता को हमारी तरफ से धन्यवाद। क्यो, सर?

आगन्तुक : बहुत-बहुत थैंक्स।

साहब : (प्लेट आगे करते हुए) थैंक यू।

[सब लोग एक-एक रसगुल्ला उठाते है कि अचानक फोन की घण्टी बजती है। साहब सोहन को फोन अटेण्ड करने का सकेत करते है]

सोहन : (फोन उठाकर) हैलो···कौन···मै टू फाइव थ्री सिक्स फोर से बोल रहा हू···हा···फरमाइए···आप कौन साहब है···कहा से बोल रहे है···हैड क्वार्टर्स से···मल्होत्रा जी साहब···साहब को अभी बुलाता हूं सर···(साहब को) साहव···हैड क्वार्टर्स का फोन है···मल्होत्रा साहब बोल रहे है···

[साहब कॉफी हाथ में लिये हुए ही अन्दर फोन सुनने जाते हैं।]

आगन्तुक : बड़े बाबू, मैं चलता हूं।

बड़े बाबू : अजी साहब, रुकिए तो सही।

आगन्तुक : (घड़ी देखकर) नही···नही···मुझ एक जगह जाना है। बहुत जरूरी है···देर हो गई। चलता हूं।

बड़े बाबू : अजी सर, साहब को तो आ जाने दीजिए।

आगन्तुक : साहब से फिर मिल लूंगा। कण्ट्रेक्ट्स के सिलसिले मे मुझ तो आते ही रहना है। (सबको) मैनी-मैनी थैंक्स।

[प्रस्थान]

साहब : (फोन पर)···क्या कहा···मैनेजर साहब का दौरा पोस्टपोण्ड हो गया···ले···कि···न···हां···हां···अगले महीने को चार-पांच तारीख को···जी···।

[एकदम फोन रखकर वापस कार्यालय में आते है।]

बड़े बाबू : क्या बात है साहब ?

साहब : मैनेजर साहब का दौरा पोस्टपोण्ड हो गया···।

सब : क्या···!

साहब : गाड़ी मिस हो जाने से वे रवाना ही नहीं हो सके···।

सब . तब फिर यह कौन था···?

साहब : हम सबकी बेवकूफी का नमूना।

सब : कोल्ड कॉफी।

[सब हंसते है कि परदा धीरे-धीरे नीचे गिरने लगता है।]

